Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَإِذَا قُرِئَ الْقُرْآنُ فَاسْتَمِعُوا لَهُ وَأَنْصِتُوا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ

(ऐराफ़ : 205)

अनुवाद : और जब क़ुरआन पढ़ा जाए तो उसकी बात ध्यान से सुनों चुप रहो कि तुम पर दया की जाए।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 7
अंक- 50

साप्ताहिक क़ादियान

# बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

20 जमादिउल अव्वल 1444 हिज्री कमरी, 15 फ़तह 1401 हिज्री शम्सी, 15 दिसम्बर 2022 ई.

## अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

“अश्लीलता को छोड़कर, अन्य सभी शरारतें और कड़वाहट महिलाओं द्वारा सहन की जानी चाहिए।”

## खेती या वृक्षों से पक्षियों को खाने का सवाब

(2320) हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो मुसलमान भी कोई पौधा लगता है या खेती बोता है फिर उससे कोई पक्षी या एक इंसान या कोई जानवर खा जाए तो यह (खेत और पेड़) उसके लिए सवाब का माध्यम बन जाते हैं।

### सुरक्षा या निगरानी के लिए कुत्ता पालने की अनुमति है

(2322) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : जो कोई कुत्ता पालेगा, उसके कर्म प्रतिदिन एक कीरात तक कम हो जायेंगे, सिवाए इसके कि वह कुत्ता जो खेती या जानवरों की रक्षा के उद्देश्य से रखा जाता है।

(2323) अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : जो कोई ऐसा कुत्ता पालता है जिससे उसे खेती या बकरियों की हिफ़ाज़त में कोई फ़ायदा न हो, तो हर दिन उसका सवाब उसके कामों से एक कीरात कम कर दिया जाएगा।

(सही बुखारी, खंड-3, किताब الحرث والمذارعة, कादियान प्रकाशित 2008)

★ ★ ★

## हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

### हुस्न-ए-मुआशरत

औरतों के साथ हुस्न मुआशरत के बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अस्सलाम ने फ़रमाया

“अश्लीलता को छोड़कर, अन्य सभी शरारतें और कड़वाहट महिलाओं द्वारा सहन की जानी चाहिए।”

और फ़रमाया :

“हमें तो कमाल बेशरमी मालूम होती है कि मर्द होकर औरत से जंग करें। हमको ख़ुदा ने मर्द बनाया और वास्तव में यह हम पर इतमाम नेअमत है। उसका शुक्रिया है कि औरतों से प्रेम और नरमी का व्यवहार करें।”

एक दफ़ा एक दोस्त के कठोर व्यवहार और बदज़ुबानी का वर्णन हुआ और शिकायत हुई कि वह अपनी बीवी से सख़्ती से पेश आता है। हज़ूर इस बात से बहुत दुखी हुए और फ़रमाया “हमारे अहबाब को ऐसा नहीं होना चाहिए।”

हुज़ूर बहुत देर तक महिलाओं से व्यवहार के बारे में गुफ़्तगु फ़रमाते रहे और आख़िर पर फ़रमाया :

“मेरा यह हाल है कि एक दफ़ा मैंने अपनी बीवी पर आवाज़ा ऊंची की थी और मैं महसूस करता था कि वह आवाज़ बुलंद दिल के दुख से मिली हुई है और जबकि कोई दिलदुखाने वाला और कठोर शब्द मुँह से नहीं निकाला था। इसके बाद मैं बहुत देर तक अस्तग़फ़ार करता रहा और बड़े दर्द और रो-रो कर नफ़िलें पढ़ीं और कुछ सदक़ा भी दिया कि यह सख्ती पत्नी पर किसी छुपी हुई अल्लाह की इच्छा का परिणाम है।”

(मल् फ़ूज़ात, भाग प्रथम, पृष्ठ 418 प्रकाशन कादियान 2018) ★ ★ ★

## इन्सान को अपने आमाल में बहुत होशयार और सावधान रहना चाहिए क्योंकि आमाल का मिटाना बहुत मुश्किल बात है

### अतः बड़ी एहतियात की ज़रूरत है, इन्सान के अमल का नतीजा ख़ाह जल्दी निकले ख़ाह देर से परंतु निकलेगा ज़रूर

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरा बनीइसराईल की आयत : 14

وَكُلَّ إِنْسَانٍ أَلْزَمْنٰهُ طٰٓئِرَهٗ فِيْ عُنُقِهٖ وَنُخْرِجُ لَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ كِتٰبًا يَّلْقٰىهُ مَنْشُوْرًا

(अनुवाद) और (हमने ज़िम्मेवार बनाया है) हर इन्सान को (इस तरह कि) हमने उसकी गर्दन में उसके अमल को बांध दिया है और हम क़ियामत के दिन उस (के आमाल) की एक किताब निकाल कर उसके सामने रख देंगे जिसे वह (बिलकुल खुली हुई पाएगा) की तफ़सीर में फ़रमाते हैं :

इस आयत में फ़रमाता है कि हमने इन्सान का अमल उसकी गर्दन में बांध दिया है या गर्दन के साथ चस्पाँ कर दिया है और क़ियामत के दिन उसे उसके सामने एक किताब की सूरत में निकालेंगे जिसे वह खुली हुई पाएगा अर्थात उसके मुताबिक़ उस से सुलूक होगा। क्योंकि खाता का रजिस्टर या हिसाब लिखने के लिए खोला जाता है या हिसाब चुकाने के लिए।

इस आयत में यह बताया गया है कि हर इन्सान को समझ लेना चाहिए कि उसका कोई फ़ेअल ज़ाए नहीं होता क्योंकि हमने इसके साथ उसका अमल गर्दन में चस्पाँ कर दिया है। गर्दन में चस्पाँ करने के अलफ़ाज़ ये बताने के लिए प्रयोग किए हैं कि उसके साथ उसका ताल्लुक़ दायमी है, जब तक वह रहेगा उसके आमाल का असर भी रहेगा।

अमल के लिए जो तायर का शब्द प्रयोग किया गया है इस से इस तरफ़ इशारा किया है कि जैसे तायर उड़ जाता है और नज़र नहीं आता वैसे ही इन्सान अपने अमल को भूल जाता है बल्कि दूसरे लोग भी भूल जाते हैं। लेकिन यह तायर वे है जो एक रस्सी से इन्सान की गर्दन से बंधा हुआ है। इस लिए जबकि वह उड़ जाए और नज़र न आए परंतु उस से ताल्लुक़ इन्सान का नहीं टूटता। एक न एक दिन उसके नतायज ज़ाहिर हो कर ही रहते हैं।

दूसरे यह बताया है कि जैसे परिंदे के पांव में लंबी रस्सी बांध कर उसे छोड़ दिया जाता है तो वह उस रस्सी की हद तक उड़ कर चला जाता है। इसी तरह इन्सानी आमाल का हाल है कि कई दफ़ा वह मामूली नज़र आते हैं लेकिन उनका असर दूर तक जाता है।

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

# इस्लाम और सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुख़ालिफ़ अलेक्जेंडर डोवी के शहर ज़ायन (zion) से शुरू होने वाली

## हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ग़ैरमामूली अहमयित और बरकतों की हामिल ऐतिहासिक अमरीका की यात्रा

## सितंबर, अक्तूबर 2022 ई. (भाग-5)

1 अक्तूबर 2022 ई रविवार का दिन(बक़ीया रिपोर्ट)

मस्जिद फ़तह अज़ीम की उद्घाटनीय समारोह

आज मस्जिद फ़तह अज़ीम के उद्घाटन के हवाले से मस्जिद के बैरूनी अहाता में नसब मारकी में एक तक़रीब का एहतिमाम किया गया था। इस तक़रीब में मुख़्तलिफ़ जमाअतों और देशों से आने वाले जमाअती ओहदेदारान और नुमाइंदों के इलावा 161 ग़ैर मुस्लिम और ग़ैर अज़ जमाअत मेहमानों ने शिरकत की। इन मेहमानों में वे समस्त मेहमान भी शामिल थे जिन्हों ने इस तक़रीब से क़बल हुज़ूर अनवर के साथ इन्फ़िरादी तौर पर और ग्रुप की सूरत में मुलाक़ात की थी।

उसके इलावा Mayor of Glen Ellyn मार्क Senak साहिब, Glen Ellyn के साबिक़ मेयर Mike Formento साहिब, ज़ायन कमिशनर Chris Fischer साहिब, Lake County बोर्ड मैंबर Gina Roberts सप्रेटिंडनट Dr. Jesse Rodriguez ज़ायन हाई स्कूल प्रिंसिपल Zackary Livingston भी इस तक़रीब में शरीक थे।

इसके अतिरिक्त इस तक़रीब में डाक्टरज़, प्रोफ़ैसर्ज़, टीचरज़, वकील, जर्नलिस्ट मीडीया के नुमाइंदे, स्कियोरटी के इदारों के नुमाइंदे और ज़िंदगी के मुख़्तलिफ़ विभागों से ताल्लुक़ रखने वाले मेहमान शामिल थे।

प्रोग्राम के मुताबिक़ 6 बजकर 10 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला मारकी मैं तशरीफ़ लाए। हुज़ूर अनवर की आमद से क़बल समस्त मेहमान अपनी नशिस्तों पर बैठ चुके थे। प्रोग्राम का आग़ाज़ तिलावत क़ुरआन-ए-करीम से हुआ मुबारक Kukoy साहिब ने की। इसके बाद इस का अंग्रेज़ी अनुवाद श्रीमान नसीरुल्लाह साहिब ने पेश किया। इसके बाद श्रीमान अमजद महमूद ख़ान साहब (नैशनल सेक्रेटरी उमूरे ख़ारजा) ने परिचयी ऐडरैस पेश किया

ज़ायन शहर के मेयर का तारीख़ी इस्तक़बालीया और हुज़ूर की ख़िदमत में शहर की चाबियाँ पेश करना

इसके बाद ज़ायन शहर के मेयर ऑनरेबल Billy Mckinne ने इस्तक़बालिया ऐडरैस पेश करते हुए कहा

आप सब का शुक्रिया आप सब पर सलामती हो और ज़ायन के ख़ूबसूरत शहर में ख़ुश-आमदीद मेरे लिए जमाअत अहमदिया मुस्लिमा के आलमी रहनुमा हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब को मस्जिद फ़तह अज़ीम के उद्घाटन के अवसर पर ज़ायन शहर में ख़ुश-आमदीद कहना इंतेहाई एज़ाज़ की बात है। ख़लीफ़तुल मसीह का आज शाम इस तक़रीब में शिरकत के लिए हज़ारों मील का सफ़र तै करके आना यक़ीनन हमारे लिए बहुत ही फ़ख़र का है।

यहां ज़ायन में हमारा माटो Historic Past and Dynamic Future है। हमारे शहर के दिल में यह ख़ूबसूरत मस्जिद इस माटो की एक आला मिसाल है। मेरी ख़ाहिश और दुआ है कि ये इबादत-गाह हमारे माज़ी और भविष्य के मध्य एक पुल का काम करे। यह जानते हुए कि यह मस्जिद ऐसी शानदार ईमान से भरपूर कम्यूनिटी के नमाज़ियों से भरी हुई है, मुझे ज़ायन शहर के भविष्य के लिए भी उम्मीद दिलाती है अगर हमें एक बेहतर ज़ायन, एक बेहतर शहर, एक बेहतर रियासत, एक बेहतर मुल्क और एक बेहतर दुनिया बनानी है तो हमें संमस्त नसलों और अक़ीदों के साथ मिलकर काम करना होगा। जब मैं इस पैग़ाम को देखता हूँ जो अहमदिया मुस्लिम कम्यूनिटी हमारे शहर में लेकर आई है तो मुझे बहुत ख़ुशी होती है। यह मुस्लमानों की वह जमाअत है जिसका उद्देश्य "मुहब्बत सब के लिए नफ़रत किसी से नहीं" है। यह एक ऐसी जमाअत है जो इस्लाम के पैग़ंबर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ताज़ीम करती है जिन्होंने ईसाइयों के साथ अह्द किया था कि उनके पैरोकार गिरजा-घरों की मुरम्मत में ईसाइयों की मदद करेंगे और गिरिजा-घरों की हर किस्म के ख़तरात से हिफ़ाज़त और दिफ़ा के लिए अपनी जानें भी क़ुर्बान करेंगे। अतः आज जमाअत अहमदिया मुस्लिमा इस शहर "ज़ाइन" मैं इसी मसलक और अक़ीदा का मुजस्सम इज़हार कर रही है। इस जमाअत ने अपने ख़लीफ़ा की बाबरकत क़ियादत में अमन, इन्साफ़, आलमी इन्सानी हुक़ूक़ और इन्सानियत की ख़िदमत के पैग़ाम के साथ तमाम मज़ाहिब के लोगों तक रसाई हासिल की है, लिहाज़ा अहमदिया मुस्लिम कम्यूनिटी की तरफ़ से इस शहर में जो शानदार ख़िदमात अंजाम दी गईं हैं और इस शहर की तरक़्क़ी और उसके लोगों की फ़लाह-ओ-बहबूद को बेहतर बनाने के लिए जो काम किए गए हैं उन पर मैं आपका दिल से से शुक्रगुज़ार हूँ। और हम इस शहर की चाबियाँ माननीय ख़लीफ़ा की ख़िदमत में पेश करते हैं।

इस ऐडरैस के बाद उन्हों ने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में ज़ायन शहर की चाबी पेश की

मैंबर आफ़ अलीनाईस जनरल का ऐडरैस

इसके बाद मैंबर आफ़ Illinois जनरल असैंबली ऑनरेबल Joyce Mason ने अपना ऐडरैस पेश करते हुए कहा

यहां ज़ायन में "मस्जिद फ़तह अज़ीम" के उद्घाटन की इस तारीख़ी तक़रीब का हिस्सा बनना मेरे लिए एज़ाज़ की बात है। ज़ायन अहमदिया मुस्लिम कम्यूनिटी के लिए तारीख़ी एहमियत का हामिल है। 61वीं ज़िला के रियास्ती नुमाइंदे के तौर पर मैं इस अवसर से खासतौर पर प्रभावित हुई हूँ क्योंकि यह न केवल अहमदिया मुस्लिम कम्यूनिटी और उसकी रुकनियत के लिए बल्कि पूरे शहर और उसके आस-पास के इलाक़े के लिए एक ख़ास लम्हा है। मैं इन तमाम मेहमानों को मुबारकबाद देना चाहती हूँ जो दुनिया-भर से सफ़र करके यहां पहुंचे। यह वाक़ई इस शहर के लिए एक ख़ास दिन है। ज़ायन एक ऐसी जगह थी जिसकी बुनियाद पिछली सदी के आग़ाज़ में इलैगज़ेंडर डोई ने रखी थी और जो उसे एक थीव क्रिटिक शहर बनाना चाहता था जिसके दरवाज़े उसके मानने वालों के इलावा बाक़ी प्रत्येक के लिए बंद थे। लेकिन आज हम एक मुख़्तलिफ़ तस्वीर देख रहे हैं। आज ज़ायन शहर मुख़्तलिफ़ मज़ाहिब से ताल्लुक़ रखने वाले पच्चीस हज़ार लोगों का घर है। यह मस्जिद द्वेष रखने वालों के बारे में मोमिनों की दुआओं की फ़तह की अलामत है। मैं अहमदिया मुस्लिम कम्यूनिटी को इस शानदार कामयाबी पर मुबारकबाद पेश करती हूँ। कम्यूनिटी और हम सब खासतौर पर ख़ुश-क़िस्मत हैं कि इज़्ज़त मआब ख़लीफ़ा ने इस उद्घाटनी तक़रीब की सदारत करने के लिए इतना लंबा सफ़र किया और मेरे लिए उनसे मिलना एक नाक़ाबिल-ए-यक़ीन एज़ाज़ की बात है।

अहमदिया मुस्लिम कम्यूनिटी का नारा "मुहब्बत सब के लिए नफ़रत किसी से नहीं" अक्सर अपने सामने रखती हूँ क्योंकि यह सिर्फ एक नारा नहीं है बल्कि यह उन अहमदी मुस्लमानों के लिए ज़िंदगी गुज़ारने का एक तरीक़ा है। इसलिए में इस कम्यूनिटी और आप सबकी तरफ़ खिंची चली जाती हूँ। दरहक़ीक़त इस कम्यूनिटी के बहुत से लोगों हैं जिन्हें में अपना ख़ानदान समझती हूँ। इज़्ज़त मआब ख़लीफ़ा अमन के फ़रोग़ के हवाला से एक सरकरदा मुस्लिम रहनुमा हैं, जो अपने ख़ुतबात, लैक्चरज़, किताबों और ज़ाती मुलाक़ातों में जमाअत अहमदिया मुस्लिमा की ख़िदमत इन्सानियत, आलमी इन्सानी हुक़ूक़ और एक शांति प्रिय और इंसाफ़ पसंद मुआशरे के क़ियाम पर मुश्तमिल इक़तेदार को प्रवान चढ़ा रहे हैं। उन्होंने अमन के क़ियाम पर-ज़ोर देते हुए दुनिया-भर के क़ानून साज़ों और दीगर रहनुमाओं से बात की है। आप महिलाओं के हुक़ूक़ के भी अलमबरदार हैं, जैसा कि मैं ज़ाती तौर पर ज़ायन की अहमदी मुस्लिम महिलाओं के हवाला से तसदीक़ कर सकती हूँ। यह कम्यूनिटी अपनी महिलाओं अराकीन का एहतेराम करती है और महिलाओं अराकीन अपनी जमाअत का लाज़िम-ओ-मल्ज़ूम हिस्सा हैं और इस मस्जिद की तामीर इस बात का ज़िंदा सबूत है क्योंकि तामीरात के लिए जमा की गई रक़म का तक़रीबन नसफ़ अहमदी मुस्लिम महिलाओं की थी।

उन्हों ने कहा ज़ायन शहर की ख़ुशक़िसमती है कि अम्न पसंद और दूसरों की ख़िदमत करने वाली जमाअत ने यहां आबाद होने और इतनी ख़ूबसूरत मस्जिद बनाने का फ़ैसला किया है। मेरी दिली तमन्ना है कि यह मस्जिद न सिर्फ इस शहर बल्कि चारों अतराफ़ के लिए उम्मीद की किरण बन जाए। यह ताल्लुक़ात को मज़बूत

शेष पृष्ठ 9 पर

# ख़ुत्बः जुमअः

निसंदेह समस्त लोगों में सबसे बढ़ कर मुझ से अपने साथी और धन के साथ नेकी करने वाला अबू बकर ही है, अगर मैं अपनी उम्मत से किसी को मित्र बनाने वाला होता तो मैं अबू बकर को बनाता, लेकिन इस्लाम का भाईचारा और प्रेम है, मस्जिद में कोई दरवाजा न रहे परंतु बंद कर दिया जाए सिवाए अबू बकर के दरवाजे के (अल् हदीस)

---

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो लोगों में सबसे अधिक अरब के वंश को जानने वाले थे

---

मक्का के लोगों के निकट, अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो उनके सबसे अच्छे लोगों में से एक थे

---

हज़रत अबू बकर वंशावली के ज्ञान की तरह अरब के दिनों मे अर्थात अरब के आपसी युद्धों के इतिहास के भी बहुत बड़े विद्वान थे। "अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की उत्कृष्टता वह व्यक्तिगत मितव्ययिता थी जिसने शुरुआत में और अंत में भी अपना उदाहरण दिखाया, जैसे कि अबू बकर का अस्तित्व جُمُوْعَةُ الْفَرَاسَتَيْن था" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

---

अल्लाह तआला ने आप रज़ियल्लाहु अन्हु को अपनी आयात के पात्र सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ के लिए चुना और आप रज़ियल्लाहु अन्हु की सच्चाई और दृढ़ता के लिए आप रज़ियल्लाहु अन्हु की प्रशंसा की।

---

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो बहुत ज्ञानी और दूरदर्शी थे और और आप स्वप्न का अर्थ समझने की कला को भी बहुत अच्छी तरह निपुण थे

---

विरोधी भी अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की अच्छाई और सदाचार के कायल थे

---

चाहिए की इब्ने अबी क़हाफ़ा लोगों की नमाज़ पढ़ाएं

---

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान खलीफा राशिद अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हो का वर्णन

---

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 11 नवम्बर 2022 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ का वर्णन हो रहा था। आपकी जीवनी के बारे में कुछ कहा गया था। इसके बारे में परंपराओं के बीच यह भी कहा जाता है कि वह वंशावली के विशेषज्ञ थे और उनमें काव्यात्मक रुचि भी थी। यह लिखा गया है कि अबू बकर सिद्दीकी रज़ियल्लाहु अन्हो अरब के लोगों के रीति-रिवाजों और वंश के बारे में सबसे अधिक जानकार थे।

जूबेर बिन मुतअम, जो वंशावली की कला में निपुण थे, ने कहा, "मैंने हज़रत अबू बकर से वंशावली का ज्ञान सीखा है।" विशेषता कुरैश की वंशावली क्योंकि हज़रत अबू बकर वह थे जिन्हें कुरैश की वंशावली और उनके वंश में होने वाली अच्छी और बुरी चीज़ों के बारे में सबसे अधिक जानकारी थी और उन्होंने उनके बुरे कामों का वर्णन नहीं किया। इस वजह से आप उनमें हज़रत अकील बिन अबू तालिब से ज़्यादा लोकप्रिय थे, अर्थात क़ुरैश के बीच ज़्यादा लोकप्रिय थे। हज़रत अबू बकर के बाद हज़रत अकील कुरैश और उनके पूर्वजों के वंश और उनके अच्छे और बुरे कर्मों के बारे में सबसे अधिक जानकार थे। लेकिन हज़रत अकील कुरैश को नापसंद थे क्योंकि वह कुरैश की बुराइयों को गिनवा देते थे। हज़रत अकील मस्जिद नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम में हज़रत अबू बकर के बगल में वंशावली, अरबकी स्थितियों और घटनाओं का ज्ञान प्राप्त करने के लिए बैठते थे। मक्का के लोगों के अनुसार, हज़रत अबू बकर उनके सबसे अच्छे लोगों में से एक थे, इसलिए जब भी उन्हें कोई समस्या आती थी, तो वे उनसे मदद माँगते थे।

**السیرۃ الحلبیہ، جلد1، صفحہ390، باب اول الناس ایماناً بہ ﷺ، دار الکتب العلمیۃ بیروت 2002ء)**

वर्णन हुआ है कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को अरब की वंशावली विशेषता क़ुरैश के वंश का इलम सबसे ज़्यादा है। इसलिए जब क़ुरैश के कवियों ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की निंदा में कविताएं कहीं तो हज़रत हस्सान बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु के सपुर्द यह ख़िदमत हुई कि वह अशआर में ही उनके निंदा का जवाब दें। हज़रत हसान रज़ियल्लाहु अन्हु जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें फ़रमाया कि तुम क़ुरैश की निंदा कैसे करोगे जबकि मैं ख़ुद भी क़ुरैश में से हूँ। इस पर हज़रत हसान रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो वसल्लम! मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को उनसे ऐसे निकाल लूँगा जैसे आटे से बाल या मक्खन से बाल निकाल लिया जाता है। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें फ़रमाया कि तुम हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के पास जाओ और उनसे क़ुरैश के वंश के बारे में पूछ लिया करो। हज़रत हसान रज़ियल्लाहु अन्हु कहते थे कि फिर मैं अशआर लिखने से पहले हज़रत अबू बकर

रज़ियल्लाहु अन्हो की ख़िदमत में हाज़िर होता और वह मेरी क़ुरैश के मर्दों और औरतों के बारे में राहनुमाई फ़रमाते। इसलिए जब हज़रत हसान रज़ियल्लाहु अन्हु के अशआर मक्का जाते तो मक्का वाले कहते कि इन अशआर के पीछे अबूबकर की राहनुमाई और मश्वरा शामिल है

(माख़ूज़ अज़ सीरत सय्यदना सिद्दीक़ अकबर,अज़ उसताज़ उमर अबू नसर, अनुवादक उर्दू, पृष्ठ 817-818)

हज़रत अबू बकर वंशावली के ज्ञान की तरह अय्याम-ए-अरब अर्थात अरबों की आपसी जंगों की तारीख़ के भी बहुत बड़े ज्ञानी थे

इसी तरह हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो गो कि बाक़ायदा शायर तो ना थे लेकिन शेअरी ज़ौक़ ख़ूब था। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो के सीरत निगारों ने यह बेहस उठाई है कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने बाक़ायदा तौर पर शेअर कहे थे या नहीं और कुछ सीरत निगारों ने इंकार किया है कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने कविताएं कहीं होंगे जबकि बाअज़ सीरत निगारों ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के कुछ अशआर का भी वर्णन किया है। इसी तरह हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के अशआर पर मुश्तमिल, पच्चीस क़सायद पर मुश्तमिल एक मख़तूता जो कि तुर्की के कुतुब ख़ाने से दस्तयाब हुआ है वहां पड़ा हुआ है। वर्णन किया जाता है कि यह हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के अशआर हैं। इस में किसी लिखने वाले ने यहां तक लिखा है कि मुझे उन अशआर की हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की तरफ़ वंश की तसदीक़ इल्हामी तौर पर हुई है। तबक़ात-ए-इब्न-ए-साद और सीरत इब्न-ए-हशाम ने यही लिखा है कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कुछ अशआर थे।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के देहांत पर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तदफ़ीन के बाद हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के अशार ये बयान किए जाते हैं अर्थात अनुवाद यह है कि आँख! तुझे सय्यद दो आलम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर रोने के हक़ की क़सम तू रोती रह और अब तेरे आँसू कभी न थमे। हे आँख! ख़िनदीफ़ अर्थात क़बीला क़ुरैश के बेहतरीन फ़र्ज़ंद पर आँसू बहा जो कि शाम के वक़्त लहद में छिपा दिए गए हैं। अतः बादशाहों के बादशाह, बंदों के वाली और इबादत करने वालों के रब का आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दुरूद हो। अतः हबीब के बिछड़ जाने के बाद अब कैसी ज़िंदगी। दस जहानों को ज़ीनत बख़शने वाली हस्ती की जुदाई के बाद कैसी आरास्तगी। अतः जिस तरह हम सब ज़िंदगी में भी साथ ही थे, काश मौत भी हम सबको एक साथ घेरे में ले लेती। (सीरत सय्यदना सिद्दीक़ अकबर ,अज़ास्ताज़ उमर अबू नसर, अनुवादक पृष्ठ 818-822) ये अशआर का अनुवाद है

आप रज़ियल्लाहु अन्हो की फ़िरासत के बारे में आता है कि बहुत साहब-ए-फ़िरासत थे। हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हो ने वर्णन किया कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने एक बंदे को इख़तेयार दिया है दुनिया का या उस का जो अल्लाह के पास है। तो उसने जो अल्लाह के पास है उसे पसंद किया है। इस पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु रो पड़े तो मैं ने अपने दिल में कहा इस बुज़ुर्ग को क्या बात रुला रही है। अगर अल्लाह तआला ने बंदे को दुनिया या जो उसके पास है पसंद करने के विषय में इख़तेयार दिया है तो फिर उसने जो अल्लाह के पास है उसे चुन लिया है तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ही वह बंदे थे और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो हम सबसे ज़्यादा इलम रखते थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अबू बकर! मत रो। आगे इनकी रिवायत में आता है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाया: अबू बकर! मत रो

निसंदेह समस्त लोगों में सबसे बढ़कर मुझसे अपनी रिफ़ाक़त और अपने माल के द्वारा नेकी करने वाला अबूबकर ही है। अगर मैं अपनी उम्मत में से किसी को ख़लील बनाने वाला होता तो मैं अबूबकर को बनाता लेकिन इस्लाम की बिरादरी और मुहब्बत ही है। मस्जिद में कोई दरवाज़ा न रहे मगर बंद कर दिया जाए सिवाए अबू बकर के दरवाज़े के।

(सही अल्-बुख़ारी, किताब अससलात, बाब الخوخة والممر فی المسجد, रिवायत नंबर : 466)

फ़िरासत के हवाले से यह हवाला दुबारा पेश किया। यह दरवाज़ों का जो हवाला है पहले भी कह चुका हूँ। उसकी एक तशरीह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी फ़रमाई है जो आगे वर्णन करूँगा। बहरहाल हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु इसी वाक़िया का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि "जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़िंदगी के आख़िरी अय्याम आए तो एक दिन आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तक़रीर के लिए खड़े हुए और सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु से मुख़ातब हो कर फ़रमाया। हे लोगो! अल्लाह तआला का एक बंदा है इस को इस के ख़ुदा ने मुख़ातब किया और कहा हे मेरे बंदे मैं तुझे इख़तेयार देता हूँ कि चाहे तू दुनिया में रह और चाहे तू मेरे पास आ जा। इस पर इस बंदे ने ख़ुदा के क़ुरब को पसंद किया। जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह फ़रमाया तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो रो पड़े। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं यहां हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के हवाले से बात हो रही है।" हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मुझे उनका रोना देखकर सख़्त ग़ुस्सा आया कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तो किसी बंदे का वाक़िया बयान फ़र्मा रहे हैं कि अल्लाह तआला ने उसे इख़तियार दिया कि वह चाहे तो दुनिया में रहे और चाहे तो ख़ुदा तआला के पास चला जाए। और उसने ख़ुदा तआला के क़ुरब को पसंद किया, यह बूढ्ढा क्यों रो रहा है? परंतु हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की इतनी हिचकी बंधी, इतनी हिचकी बंधी कि वह किसी तरह रुकने में ही नहीं आती थी।" आख़िर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि "अबूबकर से मुझे इतनी मुहब्बत है कि अगर ख़ुदा के सिवा किसी को ख़लील बनाना जायज़ होता तो मैं अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को बनाता। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कुछ दिनों के बाद वफ़ात पा गए तो उस वक़्त हमने समझा कि अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु का रोना सच्चा था और हमारा ग़ुस्सा बेवक़ूफ़ी थी।" (उस्वा ह़सना, अनवारूल उलूम, भाग 17 पृष्ठ : 102)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो जिनको क़ुरआन-ए-मजीद का यह फ़हम मिला था कि जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِي (अल् मायदः : 4) पढ़ी तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो रो पड़े। किसी ने पूछा कि यह बूढ्ढा क्यों रोता है? तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्थात हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि मुझे इस आयत से पैग़ंबर ख़ुदा, रसूल-ए-अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात की बू आती है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि अनबया-ए-अलैहिस्सलाम बतौर हुक्काम के होते हैं जैसे बंद-ओ-बस्त का मुलाज़िम जब अपना काम कर चुकता है तो वहां से चल देता है। इसी तरह अनबया-ए-अलैहिस्सलाम जिस काम के वास्ते दुनिया में आते हैं जब उस को कर लेते हैं तो फिर वे इस दुनिया से विदा हो जाते हैं । अतः जब اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ की सदा पहुंची तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने समझ लिया कि यह आख़िरी सदा है। इस से साफ़ मालूम होता है कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो का फ़हम बहुत बढ़ा हुआ था और यह जो अहादीस में आया है कि मस्जिद की तरफ़ सब खिड़कियाँ बंद की जावें। यह खिड़की की वज़ाहत भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़र्मा दी कि खिड़कियाँ बंद करने से क्या मुराद है। फ़रमाया कि यह जो हदीस में आया है कि मस्जिद की तरफ़ सब खिड़कियाँ बंद कर दी जावें परंतु अबूबकर की खिड़की मस्जिद की तरफ़ खुली रहेगी इस में यही रहस्य है कि मस्जिद चूँकि अल्लाह का निशानी होती है इसलिए हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो की तरफ़ ये दरवाज़ा बंद नहीं होगा।

अल्लाह तआला के इसरार, राज़, बातों में गहराई, अल्लाह तआला की बातों में जो हिक्मत है वह हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो पर हमेशा खुली रहेगी। बाद में भी खुलती चली जाएगी। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि अंबिया अलैहिस्सलाम संकेतों और लक्षणों से काम लेते हैं। जो शख़्स ख़ुशक मुल्ला की तरह यह कहता है कि नहीं ज़ाहिर ही ज़ाहिर होता है वह सख़्त ग़लती करता है। उदाहरणतः हज़रत इबराहीम अलैहिस्सलाम का अपने बेटे से यह कहना कि ये दहलीज़ बदल दे या आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सोने के कड़े देखना वग़ैरा उमूर अपने ज़ाहिरी अर्थों पर नहीं थे बल्कि इस्तिआरा और मजाज़ के


## इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ
KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

तौर पर थे। उनके अंदर एक और वास्तविकता थी।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि उद्देश्य मुद्दा यही थी कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को क़ुरआन को समझने का ज्ञान सबसे ज़्यादा दिया गया था इसलिए हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने यह इस्तिदलाल किया। आप फ़रमाते हैं कि मेरा तो यह मज़हब है कि अगर ये मआनी बज़ाहिर मुआरिज़ भी होते तब भी तक़्वा और दियानतदारी का तक़ाज़ा तो यह था कि अबू बकर ही की मानते अर्थात लोग उन्ही की बात मानते परंतु यहां तो एक लफ़्ज़ भी क़ुरआन-ए-मजीद में ऐसा नहीं है जो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के अर्थों के विपरीत हो। आप फ़रमाते हैं कि मौलवियों से पूछो कि अबूबकर दानिशमंद थे कि नहीं। क्या वह अबू बकर नहीं थे जो सिद्दीक़ कहलाया। क्या यही वह शख़्स नहीं जो सबसे पहले ख़लीफ़ा रसूलुल्लाह का बना। जिसने इस्लाम की बहुत बड़ी ख़िदमत की कि ख़तरनाक इर्तिदाद की वबा को रोक दिया। फ़रमाते हैं: अच्छा और बातें जाने दो। यही बताओ कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को मेम्बर पर चढ़ने की ज़रूरत क्यों पेश आई थी। फिर तक़्वा से यह बताओ कि उन्होंने जो مَا مُحَمَّدٌ إِلَّا رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ (आले : इमरान : 145) पढ़ा तो इस से इस्तदलाल पूर्ण करना था या ऐसा नाक़िस कि एक बच्चा भी कह सकता कि ईसा को मूता समझने वाला काफ़िर हो जाता है। (उद्धारित मल् फ़ूज़ात, भाग 1 पृष्ठ : 441-442 ऐडीशन 1984 ई.) अर्थात मुकम्मल यह आयत पढ़ने का मतलब ही यह था कि एक बड़ा वाज़िह और ठोस दलील दी जाए न कि नाक़िस दलील

फिर एक और अवसर पर इसी बात की वज़ाहत करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ की आयत दो पहलू रखती है। एक यह कि तुम्हारी ततहीर कर चुका। दोम किताब मुकम्मल कर चुका कहते हैं जब यह आयत उत्तरी तो अबू बकर रो पड़े। किसी ने कहा हे बुड्ढे। क्यों रोता है? आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने जवाब दिया कि इस आयत से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात की बू आती है। क्योंकि यह मुक़र्रर शूदा बात है कि जब काम हो चुकता है तो इस का पूरा होना ही वफ़ात पर दलालत करता है। जैसा दुनिया में बंद-ओ-बस्त होते हैं और जब वह ख़त्म हो जाता है तो अमला वहां से रुख़स्त होता है। जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो वाला क़िस्सा सुना तो फ़रमाया सबसे समझदार अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो हैं और यह फ़रमाया कि अगर दुनिया में किसी को दोस्त रखता तो अबू बकर को रखता और फ़रमाया। अबू बकर की खिड़की मस्जिद में खुली रहे बाक़ी सब बंद कर दो। कोई पूछे कि इस में मुनासबत क्या हुई "इस से किया मुराद है कि दोस्त रखता, फिर खिड़की खुली रहेगी। आप मुनासबत वर्णन फ़र्मा रहे हैं कि "तो याद रखो कि मस्जिद ख़ाना-ए-ख़ुदा है जो सरचश्मा है तमाम हक़ायक़-ओ-मआरिफ़ का। इस लिए फ़रमाया कि अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की अंदरूनी खिड़की इस तरफ़ है तो उस के लिए यह भी खिड़की रखी जाए। यह बात नहीं कि और सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु महरूम थे।" उनमें भी बड़े बड़े फ़िरासत वाले थे लेकिन सबसे ज़्यादा हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो में थी बल्कि अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की फ़ज़ीलत वो ज़ाती फ़िरासत थी जिसने इब्तिदा में भी अपना नमूना दिखाया और इंतिहा में भी। गोया अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हो का वजूद مَجْمُوعَةُ الْفِرَاسَتَيْنِ था।" )(मल् फ़ूज़ात, भाग 8 पृष्ठ 399-400 ऐडीशन 1984 ई. )

फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलसलो वस्सलाम फ़रमाते हैं कि "(हज़रत अबूबकर) सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो साहब-ए-तजुर्बा और साहब-ए-फ़िरासत लोगों में से थे। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने बहुत से पेचीदा उमूर और उनकी सख़्तियों को देखा और कई मारकों में शामिल हुए और उनकी जंगी चालों का मुशाहिदा किया। और आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने कई सहरा और कोहसार रौंदे और कितने ही हलाकत के मुक़ामात थे जिनमें आप निडर होकर घुस गए। और कितनी कठोर राहें थीं जिनको आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने सीधा किया। और कई जंगों में आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने पेशक़दमी की और कितने ही फ़िले थे जिनको आपने नीस्त-ओ-नाबूद किया और कितनी ही सवारियां थीं जिनको आपने सफ़रों में दुबला किया" अर्थात बेशुमार सफ़र किए कि सवारियां थक जाती थीं "और बहुत से मराहिल तै किए यहां तक कि आप साहिब तजुर्बा-ओ-फ़िरासत बन गए। आप रज़ियल्लाहु अन्हो मसायब पर सब्र करने वाले और साहब-ए-रियाज़त थे। अतः अल्लाह तआला ने आप रज़ियल्लाहु अन्हो को अपनी आयात के मौरिद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की रिफ़ाक़त के लिए चुना और आप रज़ियल्लाहु अन्हो के सिदक़-ओ-सबात के बायस आप रज़ियल्लाहु अन्हो प्रशंसा की।

यह इशारा था इस बात का कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के प्यारों में से सबसे बढ़कर हैं। आप रज़ियल्लाहु अन्हो हुरीयत के ख़मीर से पैदा किए गए और वफ़ा आप रज़ियल्लाहु अन्हो की घुट्टी में थी। इस वजह से आप रज़ियल्लाहु अन्हो को ख़ौफ़नाक अहम अमर और होश रुबा ख़ौफ़ के वक़्त मुंतख़ब किया गया और अल्लाह अलीम-ओ-हकीम है। वह तमाम उमूर को उनके मौक़ा और महल पर रखता और पानियों को उनके (मुनासिब-हाल) सर चश्मों से जारी करता है। अतः उसने इब्ने अबी क़हाफ़ा पर कृपा दृष्टि डाली और इस पर ख़ास एहसान फ़रमाया। और उसे एक अकेली शख़्सियत बना दी। और अल्लाह तआला ने फ़रमाया और वह बात करने वालों में सबसे सच्चा है।" अर्थात अल्लाह तआला ने जो फ़रमाया, अल्लाह तआला बात करने वालों में से सबसे सच्चा है। क्या फ़रमाया।

إِلَّا تَنْصُرُوهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللّٰهُ إِذْ أَخْرَجَهُ الَّذِينَ كَفَرُوا ثَانِيَ اثْنَيْنِ إِذْ هُمَا فِي الْغَارِ إِذْ يَقُولُ لِصَاحِبِهِ لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا فَأَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِينَتَهُ عَلَيْهِ وَأَيَّدَهُ بِجُنُودٍ لَّمْ تَرَوْهَا وَجَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِينَ كَفَرُوا السُّفْلَىٰ وَكَلِمَةُ اللّٰهِ هِيَ الْعُلْيَا وَاللّٰهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ

(सूरह तौबा आयत : 40) अगर तुम इस (रसूल) की मदद न भी करो तो अल्लाह (पहले भी) उसकी मदद कर चुका है जब उसे उन लोगों ने जिन्हों ने कुफ़्र क्या (वतन से) निकाल दिया था इस हाल में कि वह दो में से एक था। जब वे दोनों ग़ार में थे और वह अपने साथी से कह रहा था कि ग़म न कर निसंदेह अल्लाह हमारे साथ है। अतः अल्लाह ने उस पर अपनी सकीनत नाज़िल की और उसकी ऐसे लश्करों से मदद की जिनको तुमने कभी नहीं देखा और उसने उन लोगों की बात नीची कर दिखाई जिन्हों ने कुफ़्र किया था और बात अल्लाह ही की ग़ालिब होती है और अल्लाह कामिल ग़लबा वाला (और) बहुत हिक्मत वाला है।"

(सिररूल खिलाफ़ा, अनुवादक, पृष्ठ 60-62 रुहानी ख़ज़ायन, भाग 8 पृष्ठ 339)

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को ताबीरूर रोया का फ़न भी बहुत था।

लिखा है कि इलमें-ताबीर में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो बड़ी प्रतिभा रखते थे। इलमें-ए-ताबीर में आप रज़ियल्लाहु अन्हो को सबसे ज़्यादा फ़ौक़ियत हासिल थी। यहां तक कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पवित्र समय में आप रज़ियल्लाहु अन्हो ख़वाबों की ताबीर बताया करते थे। इमाम मुहम्मद बिन सेरीन फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो सबसे बड़े मोअबर थे। (हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो अज़ मुहम्मद इलयास पृष्ठ : 174)

हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो की वर्णन किए कुछ स्वप्नों ख़ाबों की ताबीरें वर्णन की जाती हैं। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि अहद से वापसी के अवसर पर एक शख़्स नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आया और अर्ज़ किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मैंने ख़ाब में एक बादल देखा है जिस से घी और शहद टपक रहा था और मैंने देखा कि लोग अपने हाथों में इस से ले रहे थे। कोई ज़्यादा लेने वाला कोई थोड़ा लेने वाला और मैंने एक रस्सी देखी जो आसमान तक पहुंची हुई थी और मैंने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देखा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसे पकड़ा और उसके ज़रीया ऊपर चले गए। इसके बाद एक और शख़्स ने उसे पकड़ा और वह भी इस के ज़रीया ऊपर चला गया। इसके बाद एक और शख़्स ने उसे पकड़ा और वह भी ऊपर चला गया। फिर इसके बाद एक और शख़्स ने इस रस्सी को पकड़ा और वह टूट गई। फिर उसके लिए जोड़ दी गई और वह उस के ज़रीया ऊपर चढ़ गया। हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अर्ज़ क्या हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो वसल्लम! मुझे उसकी ताबीर करने दीजीए। इजाज़त हो तो मैं ताबीर करूँ। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया उसकी ताबीर करो तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि साया करने वाला बादल तो इस्लाम है और जो शहद और घी इस में से टपक रहा था वह क़ुरआन है। इस की शीरीनी


## हदीस नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और यदि खड़े होकर संभव न हो तो बैठ कर और यदि बैठ कर भी संभव न हो तो पीठ के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

और इस की लताफ़त और लोग इस से जो शहद और घी ले रहे हैं इस से मुराद क़ुरआन हासिल करने वाला है। अर्थात क़ुरआन-ए-करीम का इलम हासिल करने वाला ज़्यादा या थोड़ा। और वह रस्सी जो आसमान तक पहुंची हुई है तो वह हक़ है जिस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसको लिया और इस के ज़रीया आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बुलंद हो गए। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद इस को एक और आदमी लेगा और उसके ज़रीया बुलंद होगा। फिर एक और, वह भी इसके ज़रीया बुलंद होगा। फिर एक और, और वह मुनक़ते हो जाएगी। फिर उसके लिए जोड़ी जाएगी और वह उसके ज़रीया बुलंद होगा। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुमने कुछ सही कहा और कुछ ग़लती की है। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ क्या हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को क़सम देता हूँ आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मुझे ज़रूर बताएं जो मैंने ठीक कहा और जो मैंने ग़लती की है। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अबू बकर कसम न दो।

(सुंन इब्ने माजा, किताब ताबीर अल् रोया, बाब ताबीर रोया, नंबर : 3918)

अर्थात : आप नहीं चाहते थे कि जो सही ताबीर है वह उस वक़्त वाज़िह तौर पर बताई जाए। इसलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि क़सम न दो। बस ठीक है जितनी तुमने कर दी है वही है।

इब्ने शहाब से मर्वी है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक ख़ाब देखा। इस ख़ाब को हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के सामने वर्णन करते हुए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैंने ख़ाब में देखा है कि जैसे में और तुम एक ज़ीने पर चढ़े हों और मैं तुमसे अढ़ाई ज़ीने आगे बढ़ गया हूँ। उन्होंने कहा ख़ैर है हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो वसल्लम! अल्लाह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को उस वक़्त तक बाक़ी रखेगा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम आपनी आँखों से वे चीज़ देख लें जो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को मसरूर करे और ख़ुश करे और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की आँखों को ठंडा करे। आपने उनके सामने इसी तरह तीन मर्तबा दुहराया। तीसरी मर्तबा फ़रमाया कि अबू बकर! मैंने ख़ाब देखा कि जैसे में और तुम एक ज़ीने पर चढ़े। मैं तुमसे अढ़ाई सीढ़ी आगे बढ़ गया। उन्होंने कहा हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को अपनी रहमत और मग़फ़िरत की तरफ़ उठा लेगा और मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाद अढ़ाई साल तक ज़िंदा रहूँगा।

(अल् तबकातुल कूबरः, भाग 3 पृष्ठ 132 दारुल कुतुब इलमिया बेरूत 2012 ई.)

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने इसकी यह तशरीह की और इसी तरह हुआ

हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पवित्र पत्नी हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा वर्णन करती हैं कि मैंने ख़ाब में अपने हुजरे में तीन चांद गिरते हुए देखे तो मैंने अपनी ख़ाब अपने पिता हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो के सामने वर्णन की। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात हुई और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तदफ़ीन हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के हुजरे में अमल में आई तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने आप रज़ियल्लाहु अन्हा से कहा ये तुम्हारे चाँदों में से एक है और यह उनमें से बेहतरीन है। (मोता किताब अल् जनाएज़, बाब باب ما جاء فی دفن المیت, नंबर 546 दारुल फ़िकर बेरूत 2002 ई.)

हज़रत अब्दुल रहमान बिन अबी लैला रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैंने देखा कि काली बकरियों का रेवड़ मेरी पैरवी कर रहा है और उनके पीछे ख़ाकसतरी रंग की बकरियों का रेवड़ है। इस पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ये अरब आपकी पैरवी करेंगे और फिर अजम उनकी पैरवी करेंगे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि फ़रिश्ते ने भी यही ताबीर की है। (मुसन्निफ़ इब्ने शीबा, भाग

10- पृष्ठ 125 किताब अअल ईमान वल रोया, हदीस 31101 फ़ारूक़ हदीस 2008)

यह तो ख़ाबों का वर्णन था

अब यह वर्णन है कि मर्दों में सबसे पहले मुस्लमान कौन था

तो इस बारे में यही है कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो का ही कहा जाता है। हज़रत अम्मार बिन यासर रज़ियल्लाहु अन्हो कहते थे कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ऐसे इबतेदाई ज़माने में देखा जबकि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ सिर्फ पाँच ग़ुलाम और दो औरतें और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो थे। (सही बुख़ारी, किताब फ़ज़ायल अस्हाब उन्नबी, बाब قول النبی ﷺ لو کنت متخذا خلیلا, हदीस नंबर 3660)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपनी तसनीफ़ सीरत ख़ातमुल अंबिया में तफ़सीली नोट लिखा है जिसमें वे लिखते हैं और उन्होंने यह बेहस की है कि सबसे पहले नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर कौन ईमान लाया था? इसलिए आप रज़ियल्लाहु अन्हो लिखते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब अपने मिशन की तब्लीग़ शुरू की तो सबसे पहले ईमान लाने वाली हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा थी जिन्हों ने एक लम्हा के लिए भी देरी नहीं किया। हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के बाद मर्दों में सबसे पहले ईमान लाने वाले के मुताल्लिक़ मौरख़्रीन में इख़तेलाफ़ है। बाअज़ हज़रत अबू बकर अब्दुल्लाह बिन अबी क़हाफ़ा का नाम लेते हैं। कुछ हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो का जिनकी उम्र उस वक़्त सिर्फ़ दस साल की थी और कुछ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आज़ाद करदा ग़ुलाम हज़रत ज़ैद बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हो का। परंतु हमारे नज़दीक यह झगड़ा फ़ुज़ूल है। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो और ज़ैद बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के घर के आदमी थे और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बच्चों की तरह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ रहते थे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का फ़रमाना था और उनका ईमान लाना। (अर्थात जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़र्मा दिया इस पर उनको यक़ीन था और ईमान था इसलिए यह कहना कि आप ईमान लाए तो यह कोई ऐसी बात नहीं है क्योंकि उनकी उम्र छोटी थी और घर के थे) बल्कि उनकी तरफ़ से तो शायद किसी कोली इक़रार की भी ज़रूरत न थी। अतः उनका नाम बीच में लाने की ज़रूरत नहीं और जो बाक़ी रहे इन सब में से हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो मुस्लमा तौर पर मुक़द्दम और ईमान पर डटे थे

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो अपनी शराफ़त और क़ाबिलीयत की वजह से क़ुरैश में बहुत मुकर्रम-ओ-मुअज़्ज़िज़ थे और इस्लाम में तो उनको वह रुत्बा हासिल हुआ जो किसी और सहाबी को हासिल नहीं था। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने एक लम्हा के लिए भी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दावा में शक नहीं किया बल्कि सुनते ही क़बूल किया और फिर उन्होंने अपनी सारी तवज्जा और अपनी जान और माल को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लाए हुए दीन की ख़िदमत में वक़्फ़ कर दिया। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु में अबू बकर को ज़्यादा अज़ीज़ रखते थे और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वफ़ात के बाद वह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पहले ख़लीफ़ा हुए। अपनी ख़िलाफ़त के ज़माना में भी उन्होंने बेनज़ीर क़ाबिलीयत का सबूत दिया। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के मुताल्लिक़ यूरोप का मशहूर मुस्तश्रिक़ स्प्रिंगर लिखता है कि अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हो का आग़ाज़-ए-इस्लाम में मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान लाना इस बात की सबसे बड़ी दलील है कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ाह चाहे धोखा खाने वाले हूँ परंतु धोखा देने वाले हरगिज़ नहीं थे बल्कि सिदक़-ए-दिल से अपने आपको ख़ुदा का रसूल यक़ीन करते थे। और सर विलियम मोयूर को भी स्प्रिंगर की इस राय से पूर्ण सहमति है।

हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा , हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो और ज़ैद बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हो के बाद इस्लाम लाने वालों में पाँच व्यक्ति थे जो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की तब्लीग़ से ईमान लाए और ये सब के सब इस्लाम में ऐसे प्रभावी और महान अस्हाब निकले कि चोटी के सहाबा में शुमार किए जाते थे। उनके नाम ये हैं। पहले हज़रत उसमान बिन अफ़फान रज़ियल्लाहु अन्हो। दूसरे अब्दुल रहमान बिन औफ़। तीसरे साद बिन अबी वक्कास। चौथे ज़ुबैर बिन अवाम। पांचवें तलहा बिन अबैदुल्लाह। ये पांचों अस्हाब अशरा मबशरा में से हैं अर्थात इन दस अस्हाब में दाख़िल हैं जिनको आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी ज़बान मुबारक से खासतौर पर जन्नत की बशारत दी थी और जो आपके निहायत निकट के सहाबी और मुशीर शुमार होते थे। (उद्धरित सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम.ए पृष्ठ 121 से 123)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो एक अवसर पर जमाअत को माली तहरीक कर रहे थे तो इस में आपने उसको इस वाक़िया के साथ भी जोड़ा। आप रज़ियल्लाहु अन्हो लखते हैं कि “मोमिन ऐसी तहरीकों पर घबराता नहीं” अर्थात

माली तहरीकों पर या क़ुर्बानी की तहरीकों पर "बल्कि ख़ुश होता है और इस को फ़ख़र होता है कि तहरीक सबसे पहले मुझ तक पहुंची। वह डरता नहीं बल्कि इस पर इस को नाज़ होता है और ख़ुदा तआला का वह शुक्रिया अदा करता है और सबसे ज़्यादा उसकी राह में क़ुर्बानी करता है और दर्जा भी सबसे बढ़कर पाता है। क्या कोई कह सकता है कि जो जो क़ुर्बानियां हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कीं या जिस जिस ख़िदमत का उनको मौक़ा हासिल हुआ है वह आरज़ू करते थे कि मुझे सबसे पहले इन क़ुर्बानियों का क्यों अवसर मिला।" कभी सोचा होगा, ख़ाहिश की होगी कि क्यों मुझे मौक़ा मिला। "उन्होंने बड़ी ख़ुशी के साथ अपने आपको ख़तरात में डाला और ख़ुदा की राह में तकलीफ़ें उठाईं। इस लिए उन्होंने वे दर्जा पाया जो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु भी न प सके क्योंकि जो पहले ईमान लाता है उसको सबसे पहले क़ुर्बानियों का अवसर मिलता है हालाँकि ख़तरात हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के ईमान लाने के वक़्त भी थे। तकलीफ़ें दी जाती थीं। नमाज़ें नहीं पढ़ने देते थे। सहाबा वतनों से बेवतन हो रहे थे। पहली हब्शा हिजरत जारी थी। तरक़्क़ियों का ज़माना उनके ईमान लाने के बहुत बाद शुरू हुआ मगर फिर भी जो मर्तबा हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को इबतेदा में ईमान लाने और आरंभ में क़ुर्बानियों का मौक़ा उपलब्ध आने की वजह से हासिल हुआ, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु उस की बराबरी न कर सके। यही वजह है एक दफ़ा हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का इख़तेलाफ़ हो गया आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि तुम लोग जिस वक़्त इस्लाम से इंकार कर रहे थे उस वक़्त अबू बकर ने इस्लाम को क़बूल किया और जिस वक़्त तुम इस्लाम की मुख़ालिफ़त कर रहे थे उसने इस्लाम की मदद की अब तुम उसको क्यों दुख देते हो। तो उनके पहले ईमान लाने और क़ुर्बानियों का इज़हार आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हालाँकि तकलीफ़ें हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी उठाएं और क़ुर्बानियां उन्होंने भी की थीं। अतः हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को इस सबक़त पर गर्व हासिल था। क्या कोई कह सकता है कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ये चाहते होंगे काश! फ़तह मक्का के वक़्त उनको ईमान लाने का अवसर मिलता बल्कि अगर दुनिया की बादशाहत को भी उनके सामने रख दिया जाता तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो उस को निहायत हक़ीर बदला क़रार देते और मंज़ूर नहीं करते बल्कि वह इस मर्तबा के मुआवज़ा में दुनिया की बादशाहत को पांव से ठोकर मारने की तकलीफ़ भी गवारा नहीं करते।"

(मिन आँसारूलाह, अनवारुल उलूम, भाग 9 पृष्ठ 30-31)

अतः यह उनकी क़ुर्बानियों का सिला था और इस तरह अल्लाह तआला दर्जा ब दर्जा सिला देता है

ग़ुलामों के आज़ाद करवाने के बारे में लिखा है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो कहा करते थे कि

اَبُوْبَكْرٍ سَيِّدُنَا وَاَعْتَقَ سَيِّدَنَا يَعْنِيْ بِلَالًا

(सही बुख़ारी, किताब फ़ज़ायल अस्हाबुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम بَابُ مَنَاقِبِ بِلَالِ بْنِ رَبَاحٍ، مَوْلَى أَبِي بَكْرٍ، رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا हदीस नंबर : 3754)

अबू बकर हमारे सरदार हैं और उन्होंने हमारे सरदार को आज़ाद किया। उनकी मुराद हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हो से थी। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने आग़ाज़ इस्लाम में अपने माल से सात ग़ुलामों को आज़ाद करवाया जिन्हें अल्लाह की वजह से तकलीफ़ दी जाती थी। इन ग़ुलामों के नाम यह हैं। हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु। आमिर बिन फ़ुहैरा रज़ियल्लाहु अन्हो। ज़नीरा रज़ियल्लाहु अन्हो। नहदीया रज़ियल्लाहु अन्हा और उनकी बेटी रज़ियल्लाहु अन्हो और उनकी बेटी बनी मुअम्मिल की एक लौंडी और उम्मे ओबेस। (الاصابة فی تمییز الصحابة भाग 3 पृष्ठ 247 अब्दुल्लाह बिन उस्मान, दारुल फ़िकर बेरूत 2001ई.)

दुश्मन भी हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की नेकी और अख़लाक़ फाज़ला के क़ायल थे इसलिए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन फ़रमाते हैं कि "अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो जैसा इन्सान जिसका सारा मक्का ममनून-ए-एहसान था। वह जो कुछ कमाते थे ग़ुलामों को आज़ाद कराने में ख़र्च कर देते थे। आप रज़ियल्लाहु अन्हो एक दफ़ा मक्का को छोड़ कर जा रहे थे कि एक रईस आप रज़ियल्लाहु अन्हो से रास्ता में मिला और उसने पूछा अबू बकर तुम कहाँ जा रहे हो?आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया इस शहर में अब मेरे लिए अमन नहीं है मैं अब कहीं और जा रहा हूँ। इस रईस ने कहा तुम्हारे जैसा नेक आदमी अगर शहर से निकल गया तो शहर बर्बाद हो जाएगा। मैं तुम्हें पनाह देता हूँ तुम शहर छोड़ कर न जाओ। आप रज़ियल्लाहु अन्हो उस रईस की पनाह में वापस आ गए। आप रज़ियल्लाहु अन्हो जब सुबह को उठते और क़ुरआन पढ़ते तो औरतें और बच्चे दीवार के साथ कान लगा लगा कर क़ुरआन सुनते क्योंकि आप रज़ियल्लाहु अन्हो की आवाज़ में बड़ी दर्द, सोज़ और पीढ़ा थी और क़ुरआन-ए-करीम चूँकि अरबी में था हर औरत, मर्द बच्चा उसके अर्थ समझता था और सुनने वाले इस से प्रभावित होते थे। जब यह बात फैली तो मक्का में शोर पड़ गया कि इस तरह तो सब लोग बेदीन हो जाऐंगे। आख़िर लोग इस रईस के पास गए और उस से कहा कि तुमने उस को पनाह में क्यों ले रखा है। इस रईस ने आकर आप रज़ियल्लाहु अन्हो से कहा कि आप इस तरह क़ुरआन न पढ़ा करें। मक्का के लोग इस से नाराज़ होते हैं। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया फिर अपनी पनाह तुम वापस ले लो मैं तो इस से बाज़ नहीं आ सकता। इसलिए इस रईस ने अपनी पनाह वापस ले ली। यह आप रज़ियल्लाहु अन्हो के तक़्वा और तहारत का कितना ज़बरदस्त सबूत है। मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के वे लोग शदीद दुश्मन थे और आपको गालियां भी दिया करते थे लेकिन अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की पाकीज़गी के वे इतने क़ायल थे कि इस रईस ने कहा आपके निकल जाने से शहर बर्बाद हो जाएगा (तफ़सीर-ए-कबीर,भाग 10 पृष्ठ 327)

नमाज़ की ईमामत के बारे में आता है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की अदमे मौजूदगी में जिन चंद अहबाब को मस्जिद नबवी में नमाज़ पढ़ाने की सआदत नसीब हुई उनमें हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो भी हैं और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की एक ख़ुसूसी सआदत यह भी है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आख़िरी दिनों में तो विशेषता आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इरशाद के मुताबिक़ नमाज़ें पढ़ाने की सआदत मयस्सर आई। इस बारे में अलग अलग रवायात हैं। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने बयान किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया वे लोग जिन में अबू बकर हों उनके लिए मुनासिब नहीं कि उनके इलावा कोई और उनकी इमामत करवाए। (सुंन अल् तिरमिज़ी, किताब अल् मुनाक़िब, बाब मनाक़िब अबी बकर रज़ियल्लाहु अन्हो, नंबर : 3673)

अस्वद वर्णन करते हैं कि हम हज़रत आईशा रज़ियल्लाहु अन्हो के पास थे कि इतने में हमने नमाज़ पर बाक़ायदगी और उसकी अज़मत का वर्णन किया तो उन्होंने फ़रमाया कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस बीमारी से बीमार हुए जिस में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़ोत हो गए थे तो नमाज़ का वक़्त हुआ और अज़ान दी गई। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अबू बकर से कहो कि वे लोगों को नमाज़ पढ़ाऐं तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया गया कि अबू बकर नरम दिल वाले हैं। जब आपकी जगह खड़े होंगे तो वह लोगों को नमाज़ नहीं पढ़ा सकेंगे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दुबारा फ़रमाया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से फिर वही अर्ज़ किया गया कि नरम दिल वाले हैं तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने तीसरी मर्तबा फिर फ़रमाया और कहा तुम यूसुफ़ वालियाँ हों। अर्थात इस तरह की बातें कर हो।

अबू बकर से कहो कि वह लोगों को नमाज़ पढ़ाऐं।

तब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो नमाज़ पढ़ाने के लिए निकले। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी तबीयत में कुछ इफ़ाक़ा महसूस किया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम निकले और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को दो आदमियों के दरमयान सहारा दिया जा रहा था। वह कहती हैं मुझे ये ऐसा ही याद है गोया कि मैं अब भी देख रही हूँ कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पांव बीमारी की वजह से ज़मीन पर लकीरें डाल रहे थे अर्थात सही तरह चल नहीं सकते थे। पांव उठा नहीं सकते थे तो पांव ज़मीन में घिसट रहे थे। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने जब आपको इस तरह आते हुए देखा तो चाहा कि पीछे हट जाएं परंतु नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इशारतन फ़रमाया कि अपनी जगह पर ही रहें। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को लाया गया यहां तक कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के पहलू में बैठ गए। अमश से कहा गया और क्या नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम नमाज़ पढ़ा रहे थे और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो आपकी नमाज़ की इक़तेदा में पढ़ते थे और लोग हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की नमाज़ की इक़तेदा में पढ़ते थे तो उन्हों ने सर से इशारा किया कि हाँ। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के बाएं तरफ़ बैठे और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो खड़े हो कर नमाज़ पढ़ रहे थे।

(सही बुख़ारी ,किताब अल् अज़ान, باب حد المریض ان یشهد الجماعة, हदीस नंबर : 664)

हज़रत अनस बिन मालिक अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हो ने, ये रावी कहते हैं कि, मुझे बताया। उन्होंने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की अनुसरण किया और ख़िदमत की और आपकी सोहबत में रहे। फिर बताया कि अबूबकर उन लोगों को नमाज़ पढ़ाया करते थे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इस बिमारी में जिस में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वफ़ात हो गई यहां तक कि जब रविवार का दिन हुआ और वह नमाज़ में सफ़ों में थे तो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हुजरे का पर्दा उठाया। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हमें देख रहे थे और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम खड़े हुए थे। गोया कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का पवित्र मुख कुरान-ए-मजीद का पृष्ठ था। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़ुश हो कर तबस्सुम फ़रमाया और हमें ख़्याल हुआ कि हम नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को देखने की वजह से ख़ुशी से आज़माईश में पड़ गए हैं। इतने में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो अपनी एड़ीयों के बल पीछे हटे ताकि वह सफ़ में मिल जाएं और वे समझे कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नमाज़ के लिए बाहर तशरीफ़ ला रहे हैं परंतु नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इशारतन फ़रमाया कि अपनी नमाज़ पूरी करो और पर्दा डाल दिया और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उसी दिन फ़ौत हो गए। (सही बुख़ारी, किताब अल् आजान, बाब اهل العلم والفضل احق بالامامة، हदीस नम्बर : 680)

एक रिवायत में है कि इन्ही दिनों में एक मर्तबा हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने नमाज़ पढ़ाई थी। उसकी तफ़सील यूं मिलती है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन जामा रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बीमारी शदीद हो गई और मैं मुस्लमानों की एक जमाअत में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में मौजूद था। हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हो ने आपको नमाज़ के लिए बुलाया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया किसी को कहो कि वे लोगों को नमाज़ पढ़ाए। हज़रत अब्दुल्लाह बिन जामा रज़ियल्लाहु अन्हो बाहर निकले तो देखा हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु लोगों में थे और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो मौजूद न थे। कहते हैं मैं ने कहा कि उमर रज़ियल्लाहु अन्हु! खड़े हो जाएं और लोगों को नमाज़ पढ़ाऐं। वे आगे बढ़े और अल्लाहु-अकबर कहा। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनकी आवाज़ सुनी, (हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की आवाज़, बुलंद आवाज़ थी) तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अबू बकर कहाँ हैं? अल्लाह इस का इंकार करता है और मुस्लमान भी। अल्लाह इस का इंकार करता है और मुस्लमान भी। आपने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को बुला भेजा। वह आए और बाद इस के कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु नमाज़ पढ़ा चुके थे फिर उन्होंने लोगों को नमाज़ पढ़ाई। यह भी एक रिवायत है।

एक और रिवायत में है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की आवाज़ सुनी तो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बाहर तशरीफ़ लाए यहां तक कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपना सिर मुबारक अपने हुजरे से बुलंद करके देखा। फ़रमाया : नहीं। नहीं। नहीं। चाहिए कि इब्ने अबी कुहाफ़ा लोगों को नमाज़ पढ़ाऐं । आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह नाराज़गी से फ़रमाया

(सुंन अबू दाऊद, किताब अल् निकाह, बाब गेयरः, हदीस नंबर : 4660-4661)

इस रिवायत की मज़ीद तफ़सील मस्नद अहमद में यह मिलती है कि जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को इस बात का इलम हुआ तो उन्होंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन जामा रज़ियल्लाहु अन्हो से जिन्हों ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा था कि आप नमाज़ पढ़ाऐं कहा कि मैं ने तो समझा था कि तुम्हें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि मुझे नमाज़ पढ़ाने का कहा जाए अन्यथा मैं कभी भी नमाज़ नहीं पढ़ाता। तो इस पर उन्होंने, अब्दुल्लाह बिन जामा रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि नहीं। मैं ने जब देखा कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो नज़र नहीं आ रहे तो ख़ुद ही यह सोचा कि इस के बाद आप ही नमाज़ पढ़ाने के अहल हैं। इसलिए मैंने ख़ुद आप रज़ियल्लाहु अन्हो की ख़िदमत में नमाज़ पढ़ाने की दरख़ास्त की थी। मुझे बराह-ए-रास्त नहीं कहा गया था। यह मस्नद की रिवायत है। (मस्नद अहमद बिन हनबल, भाग 6, पृष्ठ 412-413 हदीस अब्दुल्लाह बिन ज़मा, हदीस नंबर : 19113 आलेमुल कुतुब बेरूत 1998 ई.)

आप रज़ियल्लाहु अन्हो की शफ़क़त-ए-औलाद के बारे में लिखने वाले लिखते हैं, एक मुसन्निफ़ ने लिखा है कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को अपनी औलाद से बहुत मुहब्बत थी। अपने क़ौल-ओ-अमल से वे अक्सर इस बात का इज़हार भी करते रहते थे। बड़े साहबज़ादे हज़रत अब्दुल रहमान अलग मकान में रहते थे लेकिन उनके घर का ख़र्च हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपने ज़िम्मा ले रखा था। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की बड़ी साहबज़ादी हज़रत अस्मा रज़ियल्लाहु अन्हा की शादी हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम रज़ियल्लाहु अन्हो से हुई थी। वह शुरू शुरू में बहुत तंगदस्त थे। घर में कोई ख़ादिम या ख़ादिमा रखने की ताकत न थी इसलिए हज़रत अस्मा रज़ियल्लाहु अन्हा को बहुत काम करना पड़ता। वह आटा गूँधती थीं। खाना पकाती थीं। पानी भर्ती थीं। डोल सेती थीं और काफ़ी फ़ासले से खजूर की गुठलियां सिर पर लाद कर लाती थीं यहां तक कि घोड़े को चारा भी खिलाती थीं। हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो को जब इन हालात का इलम हुआ तो उन्होंने एक ख़ादिम भेजा जो घोड़े को चारा खुलाता और उसकी देख-भाल करता था। हज़रत अस्मा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं कि ख़ादिम भेज कर गोया अब्बा जान ने मुझे आज़ाद दिया।

(सही अल्-बुख़ारी, किताब अन्निकाह, बाब अल् गेयरः, हदीस नंबर : 5224)

एक और वाक़िया लिखा है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को अपनी बीवी आतिका से मुहब्बत थी। इस की वजह से उन्होंने जिहाद पर जाना छोड़ दिया था। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो यह बर्दाश्त न कर सकते थे। उन्होंने हज़रत अब्दुल्लाह को हुक्म दिया कि तुमने बीवी की वजह से जिहाद पर जाना छोड़ दिया है तो उसे तलाक़ दे दो। तो उन्होंने इस हुक्म की तामील तो कर दी लेकिन आतका के फ़िराक़ में बड़ी पुरदर्द कविताएं कहीं। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के कानों तक यह अशआर पहुंचे तो उनका दिल पसीज गया और उन्होंने हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो को रुजू करने की इजाज़त दे दी।

(سیرۃ خلیفۃ الرسول ﷺ सय्यदना हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो अज़ तालिब हाश्मी, पृष्ठ 349 से 351हसनात अकैडमी लाहौर)

हज़रत बरा रज़ियल्लाहु अन्हो ने बयान किया कि मैं हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ उनके घर वालों के पास अंदर दाख़िल हुआ तो देखा कि उनकी बेटी हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा लेटी हुई हैं। उन्हें बुख़ार हो गया था। मैंने देखा कि उन्होंने अर्थात हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के बालों पर बोसा दिया और उनकी तबीयत पूछी कि हे मेरी बेटी तुम कैसी हो?

(सही बुख़ारी, किताब मनाक़िब आंसार, बाब हिजरत नबी (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) सहाबा, हदीस नंबर : 3918)

यह वर्णन इंशा अल्लाह आइन्दा भी कुछ वर्णन होगा

★ ★ ★

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 103 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

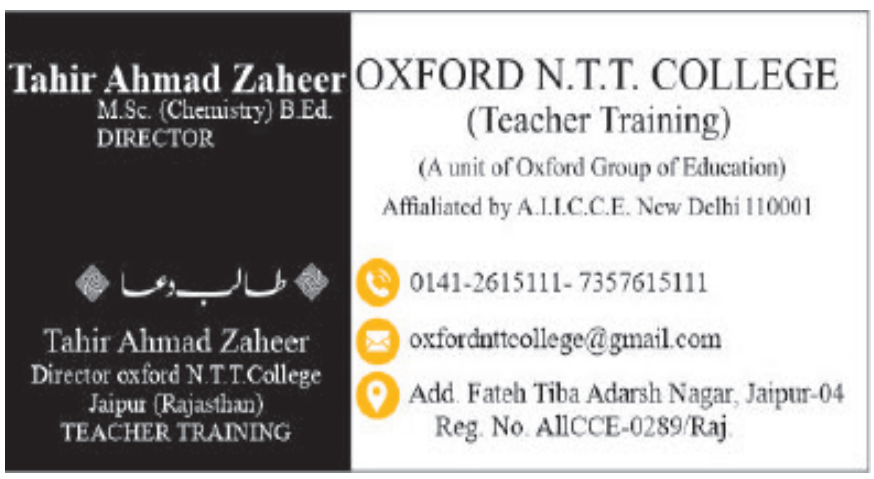

पृष्ठ दो का शेष

बनाने और ज़ायन और इस से बाहर अमन और इन्साफ़ के क़ियाम के लिए बाहमी ज़राए तलाश करने में मदद करे। मैं इस कम्यूनिटी को नई मस्जिद के उद्घाटन पर मुबारकबाद देते हुए ऐवान में एक क़रारदाद पेश कर रही हूँ। मैं इस ख़ुशी के दिन का हिस्सा बनने और इस ख़ास जमाअत का हिस्सा बनने पर शुक्रगुज़ार हूँ। बहुत बहुत मुबारकबाद और शुक्रिया

ऑनरेबल राजा कृष्णमूर्ति का

इसके बाद ऑनरेबल राजा Krishn Moorthi ने अपना ऐडरैस पेश किया मौसूफ़ ने कहा : आप सब पर सलामती हो। आपके साथ यहां शामिल होना एज़ाज़ की बात है। यह एक हक़ीक़ी एज़ाज़ है। मैं इज़्ज़त मआब ख़लीफ़ा के विषय में और उनकी कामयाबियों के बारे में घंटों बोल सकता हूँ। मैं आपकी यहां आमद से बहुत प्रभावित हुआ हूँ और आज का दिन तारीख़ में याद रखा जाएगा। यहां आने से पहले मैंने हुज़ूर के साथ चंद मिनट गुज़ारे थे और मैंने उन्हें अमरीका में अहमदिया मुस्लिम कम्यूनिटी के बारे में भी बताया। वह बेहतरीन लोगों में से कुछ हैं जिनसे आप कभी मिलेंगे। वह आम तौर पर जुनूबी एशियाई कम्यूनिटी में होते हैं, इसलिए मैं उनके बहुत क़रीब हूँ क्योंकि में एक हिन्दुस्तानी नज़ाद अमरीकी हूँ। अमरीका में जुनूबी एशियाई कम्यूनिटी जिसका अहमदिया मुस्लिम कम्यूनिटी एक लाज़िमी अंग है, बहुत कामयाब है। यह अमरीका में सबसे तेज़ी से बढ़ती हुई नसली अक़ल्लीयत है। यह सबसे ज़्यादा ख़ुशहाल और बेहतरीन तालीम याफ़ता है। अहमदिया मुस्लिम कम्यूनिटी के लोगों में से कुछ ऐसे लोगों से भी आप को मिलेंगे जिन्हों ने अपने आपको हस्पतालों के क़ियाम से लेकर स्कूलों तक, ख़ून के अतयात की मुहिम, ज़रूरतमंद लोगों की मदद करने से लेकर क़ुदरती आफ़ात में इमदादी कार्यवाहियां करने तक अपने आपको ख़िदमत के लिए वक़्फ़ कर दिया है। ये लोग इन इक़दार का मुजस्सम हैं जिनकी वह तब्लीग़ करते हैं। आख़िर में एक नज़्म का हवाला देना चाहूँगा जो मुझे बहुत पसंद है, जो मेरे नज़दीक अहमदिया मुस्लिम कम्यूनिटी का ख़ुलासा है। यह नज़्म कुछ इस प्रकार है।

मैंने अपनी रूह को तलाश किया
लेकिन अपनी रूह को नहीं देख सका
मैंने अपने ख़ुदा को तलाश किया
लेकिन ख़ुदाई का सिर्फ इशारा ही मिला
मैंने अपने भाई को ढूंडा
तो मुझे तीनों चीज़ें मिल गईं

मुझे यक़ीन है कि अहमदिया मुस्लिम कम्यूनिटी जो कि अमरीका और दुनिया की बेहतरीन बिरादरियों में से एक है, इन्सानियत की ख़िदमत में अपने आपको वक़्फ़ कर देती है। इसलिए मैं हुज़ूर का शुक्रिया अदा करता हूँ। मैं इस लिए भी आपका शुक्रिया अदा करता हूँ कि आप तशरीफ़ लाए और हमें वक़्त से नवाज़ा और आज रात उस प्रोग्राम में शिरकत के लिए भी आप सब का शुक्रिया। ख़ुदा आप पर फ़ज़ल फ़रमाए। शुक्रिया

डाक्टर केतरीना लेंटोस् का ऐडरैस

इसके बाद डाक्टर Katrina Lantos Swett जो कि Lantos फ़ाउंडेशन फ़ार हियूमन राईट्स ऐंड जस्टिस की चेयरमैन हैं ने अपना ऐडरैस पेश करते हुए कहा : जैसा कि मुझसे पहले मुक़र्ररीन ने इस बात का इज़हार किया है कि आज शाम यहां उनकी मौजूदगी उन के लिए कितनी बाइस-ए-मसर्रत-ओ-इफ़्तिख़ार है, इसी तरह मैं भी इस बात का इज़हार करना चाहती हूँ कि आज शाम की ग़ैरमामूली तक़रीब में शमूलीयत मेरे लिए फ़ख़र की बात है। मुझे बे-इंतिहा ख़ुशी है कि मैं जमाअत अहमदिया को अब कई सालों से जानती हूँ और मुझे ऐसा महसूस होता है कि जब भी मैं अहबाब जमाअत के साथ मिलती हूँ तो मेरी रूहानियत में इज़ाफ़ा होता है। मैं कभी ऐसे किसी दूसरे मज़हबी गिरोह से नहीं मिली जो हूबहू अपनी इस तालीम का मुजस्सम हो जिसका वह परचार करते हैं और जो रोज़ाना अपनी ज़िंदगियों में मौजूद आला उसूलों और नमूनों की पैरवी करते हूँ और मेरा ख़्याल है कि इस कमरे में बैठे हुए तमाम लोग मेरे इस ख़्याल से इत्तिफ़ाक़ करेंगे कि यह ख़ासीयत और ऐसी उलुलअज़मी ख़ुदा ही इनायत कर सकता है या फिर हुज़ूर जैसी एक अज़ीम शख़्सियत भी इस का ज़रीया बन सकती है और मैं अपने आपको इंतिहाई ख़ुश-क़िस्मत समझती हूँ कि आज यहां आप सब के साथ हूँ।

जब मेरे दोस्त अमजद साहिब जो कि जमाअत अहमदिया के लिए ख़िदमत बजा ला रहे हैं, ने यहां ज़ायन में होने वाले मुबाहला के बार है में बताया तो मैं यह सुनकर हैरत-ज़दा हो कर रह गई थी। यह बात ऐसी हैरानकुन है कि इस ज़माना में जबकि मोबाइल फ़ोन, कम्पयूटर और दीगर ज़राए मुवासलात भी मौजूद नहीं थे इस ज़माने में भी इस मुक़ाबले को इतनी तशहीर मिली।

इस मुक़ाबला में उलूहियत और इन्सानियत और मुआशरती लिहाज़ से दो मुख़्तलिफ़ नज़रियात पेश किए गए थे। एक नज़रिया डाक्टर जान डोई का था जिसकी बुनियाद नफ़रत, बाहमी तफ़रीक़ और तास्सुब पर रखी गई थी और दूसरा नज़रिया जो कि बानी जमाअत अहमदिया मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब का था जो कि बाहमी इज़्ज़त और बुर्दबारी पर मुश्तमिल था और एक ऐसी शख़्सियत की तरफ़ से था जिन्हों ने इसका नतीजा कुल्लियतन अल्लाह के हाथ में छोड़ रखा था। फिर नतीजतन हम जानते हैं कि इस मुबाहला मैं किस की फ़तह हुई।

और यक़ीनन यह मस्जिद जिसका अब उद्घाटन होने जा रहा है, जिसका नाम फ़तह अज़ीम मस्जिद रखा गया है, उसका मतलब ही एक अज़ीमुश्शान फ़तह है जो कि इस मुबाहला में जमाअत अहमदिया और बानी जमाअत अहमदिया के हिस्सा में आई। लेकिन मेरे ख़्याल में हमें यह कहना चाहिए कि वह न सिर्फ जमाअत अहमदिया बल्कि इन्सानियत की भी फ़तह थी, क्योंकि इस से बाहमी इज़्ज़त, मुहब्बत और तहम्मुल की भी फ़तह हुई। जिसका नमूना हम अब इस अज़ीमुश्शान जमाअत में देखते हैं।

उन्हों ने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का वाक़िया तफ़सील से वर्णन करते हुए कहा कि यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाईयों ने उस के लिए बहुत बुरा किया था लेकिन ख़ुदा तआला ने उन के लिए भला किया। बाद में उसने अपने भाईयों को माफ़ कर दिया और सिर्फ इतना कहा कि तुम लोगों ने तो बुरा चाहा था लेकिन ख़ुदा ने भला कर दिया

अब जब में यह ख़ूबसूरत मस्जिद देखती हूँ जो इसी मुबाहला वाली जगह अर्थात ज़ाइन में तामीर की गई है, तो मुझे वही यूसुफ़ अलैहिस्सलाम वाला वाक़िया याद आता है कि जान डोई ने बुरा चाहा था लेकिन ख़ुदा ने भला कर दिया और अज़ीमुश्शान फ़तह जमाअत अहमदिया के हिस्सा में आई।

उन्हों ने कहा हमें आज शाम उन अहमदियों को भी याद रखना होगा जो कि दुनिया के एक दूसरे हिस्से में पाकिस्तान में बैठे हुए हैं और अपने मज़हब की वजह से रोज़ाना ना-काबिल वर्णन ज़ुल्म अत्याचार और मुनाफ़रत का सामना करते हैं। जो कि हुकूमत वक़्त के होते हुए भी अपने आपको अकेला महसूस करते हैं। क्योंकि हुकूमत उनको हिफ़ाज़त मुहय्या करने से इंकार करती है। पुलिस उनको तहफ़्फ़ुज़ फ़राहम नहीं करती और दूसरे मज़हबी रहनुमा अपने पैरोकारों को तरग़ीब दिलाते हैं कि वह उन पर बोलें।

चंद दिन पहले जमाअत अहमदिया से ताल्लुक़ रखने वाले दोस्त ने एक नई किस्म के तशद्दुद के हवाले से सूचना दी है कि एक रहनुमा अपने पैरोकारों की महिलाओं को अहमदी महिलाओं को निशाना बनाने की तरग़ीब दिला रहा है ताकि मज़ीद अहमदी बच्चे पैदा होने से रोके जाएं। यह इंतेहाई ख़ौफ़नाक जरायम हैं और बुनियादी इन्सानी हुक़ूक़ की पामाली है। लिहाज़ा मेरे ख़्याल में सबसे अहम बात यह है कि जमाअत जान ले कि दीगर अहमदी अहबाब के साथ साथ हम लोग भी उनके साथ खड़े हैं जो कि इस कम्यूनिटी से ताल्लुक़ नहीं रखते।

मैं अपने अहमदी भाईयों और बहनों से यह कहना चाहती हूँ क्योंकि हम यक़ीनन आपस में भाई बहन ही हैं, हम सब जो आपकी जमाअत से अक़ीदत रखते हैं और आपकी अच्छाईयों और तालीमात से अवगत हैं और पाकिस्तान में मौजूद आपके भाईयों की तकालीफ़ से अवगत हैं, हम आपसे यह कहना चाहते हैं कि जहां आप जाऐंगे, वहीं हम जाऐंगे और जहां आप रुकेंगे वहीं हम रुकेंगे। हम आपके साथ होंगे और आख़िर तक आपके साथ खड़े रहेंगे हमें आपसे अक़ीदत रखते हैं और आज इस अज़ीम तक़रीब में शमूलियत हमारे लिए गर्व है और मैं आप सबकी मशकूर हूँ कि आपने मुझे इसका हिस्सा बनने का सौभाग्य दें।

इसके बाद श्रीमान अमीर साहिब जमाअत अहमदिया यू. ऐस. ए श्रीमान साहिबज़ादा मिर्ज़ा मग़फ़ूर अहमद साहिब ने डाइसक पर आकर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला की ख़िदमत में ख़िताब फ़रमाने की दरख़ास्त की

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का ख़िताब

6 बजकर 55 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अंग्रेज़ी ज़बान में मेहमानों से ख़िताब फ़रमाया। इस का उर्दू अनुवाद पेश किया जा रहा है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम के साथ अपने ख़िताब का आग़ाज़ फ़रमाया और तमाम मुअज़्ज़िज़ मेहमानान को अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाही व बरकातहू कहा

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : सबसे पहले तो मैं आप सब का जो आज शाम हमारे साथ यहां शामिल हैं शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ। यह तक़रीब कोई दुनियावी तक़रीब नहीं बल्कि ख़ास मज़हबी तक़रीब है जिसको आयोजित एक इस्लामी जमाअत ने किया है। इस लिए इस तक़रीब में शमूलियत आप लोगों की कुशादा दिल्ली, बर्दाश्त और वुसअत-ए-नज़र की अक्कास है। अतः आज यहां ज़ायन में हमारी नई मस्जिद के उद्घाटन के अवसर पर हमारे साथ

शामिल होने पर मैं दिल से आप सब का मशकूर हूँ।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : इस शहर में जमाअत अहमदिया मुस्लिमा का क़ियाम कई दहाईयां पहले हुआ था लेकिन हमारे पास बाक़ायदा कोई मस्जिद नहीं थी जहां हम इबादत कर सकते। इस लिए आज का दिन हमारी जमाअत के लिए बड़ा अहम और बहुत ख़ुशी का बायस है। यक़ीनन तमाम मज़हबी जमाअतों के लिए एक ऐसी जगह का मुहय्या होना बहुत अहम है जहां इस मज़हब के लोग जमा हो कर इबादत कर सकें। जहां तक इस्लाम का ताल्लुक़ है तो हमारे नज़दीक मस्जिद के दोहरे फ़ायदे हैं। एक तो यह कि मस्जिद मुस्लमानों के लिए इकट्ठे हो कर ख़ुदा तआला की इबादत करने और उनके मज़हबी फ़रायज़ को अदा करने का अवसर फ़राहम करती है। जैसा कि इस्लाम मुस्लमानों को रोज़ाना पाँच मर्तबा इबादत करने का हुक्म देता है। इस के इलावा मस्जिद के तामीर करने का दूसरा बड़ा फ़ायदा यह है कि मस्जिद के ज़रीया मुआशरा के अन्य लोगों को इस्लामी तालीमात से मुतआरिफ़ करवाया जा सकता है। अगर वे लोग जो ख़ालिस हो कर मस्जिद में इबादत करते हैं, वह सही अर्थों में इस्लामी तालीमात पर ग़ौर-ओ-फ़िक्र करें और उन तालीमात को अमली तौर पर पेश करें। तिब्बी तौर पर मुक़ामी लोगों के अंदर इस्लाम के विषय में जानने का शौक़ और जुस्तजू पैदा होगी। इस्लाम के बारे में उनके इलम-ओ-फ़हम में इज़ाफ़ा होगा और मुस्लमानों को अपने अंदर पुरअमन तौर पर रहते हुए और मुआशरा का मुसबत हिस्सा बनते देखकर उनके दिलों में जो ख़ौफ़ या तहफ़्फ़ुज़ात हैं वह भी दूर हो जाऐंगे। इं शा अल्लाह। अतः यह दो उद्देश्य हैं जिनको पूरा करने के लिए जमाअत अहमदिया दुनिया-भर में मसाजिद तामीर करती है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : आप में से बाअज़ यह भी सोच रहे होंगे कि अहमदी मुस्लमानों और दीगर मुस्लमानों में क्या अंतर है? क़ुरआन-ए-करीम और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इस हवाला से एक अज़ीमुश्शान भविष्यवाणी है। यह मुक़द्दर था कि कई सदियां गुज़र जाने के बाद मुस्लमान इस्लामी तालीमात से दूर हट जाऐंगे और आख़िर कार मुस्लमानों की अक्सरियत इस्लामी तालीमात को छोड़ देगी और सिर्फ नाम के ही मुस्लमान रह जाऐंगे। साथ ही अल्लाह तआला और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह भी ख़ुशख़बरी दी कि इस रुहानी ज़वाल के दौर में अल्लाह तआला इस्लाम की असल तालीमात को पुनः ज़िंदा करने के लिए एक मौऊद मुस्लेह को भेजेगा जिसको मसीह मुहम्मदी का ख़िताब दिया जाएगा। वह मसीह दुनिया को बताएगा कि इस्लामी तालीमात तो अमन, मुहब्बत और हम-आहंगी की तालीमात हैं। वह मसीह लोगों को तलक़ीन करेगा कि एक दूसरे के साथ मिलकर पुर अमन तौर पर ज़िंदगी गुज़ारें और एक दूसरे के साथ मज़हबी इख़्तेलाफ़ात से बाला हो कर बाहमी प्यार और मुहब्बत के ताल्लुक़ात क़ायम करें। इसलिए अहमदी मुस्लमान होने के नाते हमारा पुख़्ता यक़ीन है कि इस जमाअत के बानी हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादियानी अलैहिस्सलाम वही मौऊद मसीह और महदी हैं जिनके विषय में क़ुरआन-ए-करीम और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भविष्यवाणी फ़रमाई थी

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया सिलसिला अहमदिया के सनसंथापक ने सारी ज़िंदगी अपने पैरोकारों को प्यार, हमदर्दी और एहसान पर मुश्तमिल इस्लामी तालीम पर अमल पैरा रहते हुए तब्लीग़ इस्लाम करने का पैग़ाम पहुंचाने और लोगों के दिल-ओ-दिमाग़ जीतने की तलक़ीन फ़रमाई। हक़ीक़त तो यह है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ऐलान किया कि वह मसीह मूसवी की तरह इस्लामी तालीमात फैलाएंगे। इसलिए हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की तरह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बनीनौ इन्सान से हमदर्दी और प्यार का इज़्हार फ़रमाया। आप अलैहिस्सलाम का हर शब्द और अमल क़ियाम अमन और मुआशरा में बाहमी प्रेम के क़ायम करने के लिए था। आप अलैहिस्सलाम ने अपने पैरोकारों को तालीम दी कि इस्लाम का असल मतलब ही अमन और सलामती है। आप अलैहिस्सलाम के ज़हूर के बाद इस्लाम अपनी असली रुहानी हालत की तरफ़ लौट आएगा और एक दिन दुनिया इस्लाम को एक प्यार, मुहब्बत, बुर्दबारी हम-आहंगी और अमन के मज़हब के तौर पर जानेगी। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने वाज़ह किया कि क़ुरआन की तालीमात के मुताबिक़ इस्लाम के आग़ाज़ में जो जंगें लड़ी गईं वे महिज़ दिफ़ाई थीं और सख़्त तरीन अत्याचारों को रोकने के लिए लड़ी गईं। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दौर मुबारक या आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की चार ख़ुलफ़ाए राशेदीन के दौर में एक मर्तबा भी ऐसा न हुआ कि इस्लामी फ़ौजों ने अज़ ख़ुद जंग शुरू की हो या किसी किस्म का ज़ुलम य न इंसाफ़ी की हो बल्कि जिस भी जंग या लड़ाई में मुस्लमान शामिल हुए उसका मक़सद ज़ुलम-ओ-बरबरीयत का था।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया आजकल नए दौर में जहां जुग़राफ़ियाई झगड़े दिन-ब-दिन दुनिया में तबाही-ओ-बर्बादी लेकर आ रहे हैं वहां हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि हर किस्म की मज़हबी जंग बंद है। इसलिए मुस्लमानों या किसी भी मज़हब के लोगों के लिए मज़हब के नाम पर जंग करना किसी तौर पर भी जायज़ न था। इसलिए यह वाज़ह हो कि जमाअत अहमदिया मुस्लिमा का उद्देश्य इलाक़ों, मुल्कों या शहरों पर क़बज़ा करना या अक़्वाम को ध्वस्त करना नहीं है। न ही इन देशों में जहां हमारे पैग़ाम को बड़ी संख्या ने क़बूल किया कभी किसी ने सयासी ताक़त या दुनियावी असर-ओ-रसूख़ हासिल करने की इच्छा की।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया हमारा वाहिद उद्देश्य और इच्छा यही है कि प्यार के ज़रीया बनीनौ इन्सान के दिलों को जीता जाए और उनको ख़ुदा तआला के क़रीब किया जाए ताकि वे इसके हक़ीक़ी बंदे बन सकें और एक दूसरे के हुक़ूक़ अदा कर सकें। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक बहुत ही ख़ूबसूरत शेअर में फ़रमाया कि उन्हें किसी दुनियावी रुत्बा या सयासी ताक़त की ख़ाहिश नहीं है। आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

मुझको क्या मुल्कों से मेरा मुलक है सबसे जुदा
मुझको क्या ताजों से मेरा ताज है रिज़्वान-ए-यार

दुनियावी और सयासी ताक़तों से मुकम्मल बे ग़ुबती ही जमाअत अहमदिया मुस्लिमा का शुरू से तुर्रा इमतियाज़ रहा है और आइन्दा भी रहेगा। हम तो केवल इस्लाम की मुहब्बत और अमन की तालीमात फैलाना चाहते हैं जो कि हम पिछले 130 से अधिक वर्षों से कर रहे हैं और अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से हर साल दुनिया-भर से हज़ारहा लोग हमारी जमाअत में शामिल होते हैं। हमारा किसी मज़हब या क़ौम या शख़्स से कोई द्वेष या लड़ाई नहीं है। बल्कि जो लोग अल्लाह तआला के मुक़ाबिल खड़े होते हैं और इस के मज़हब को तबाह करना चाहते हैं, उन के लिए भी हमारा रद्द-ए-अमल यह नहीं होता कि उनके ख़िलाफ़ हथियार उठा लिए जाएं या उन पर किसी किस्म का जबर किया जाए। बल्कि इस के विपरीत हमारा रद्द-ए-अमल सिर्फ यही होगा कि हम कामिल आजिज़ी के साथ ख़ुदा तआला के हुज़ूर झुकेंगे। हमारा वाहेद हथियार तो दुआ ही है और हमें यक़ीन है कि ख़ुदा तआला हमारी दुआओं को सुनता है। यक़ीनन हमारी जमाअत की एक सौ तेंतीस साला तारीख़ इस हक़ीक़त पर गवाह है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : जहां तक आज़ादी मज़हब और आज़ादी ज़मीर का ताल्लुक़ है तो हम इस बात पर पुख़्ता यक़ीन रखते हैं कि मज़हब और अक़ीदा प्रत्येक का ज़ाती मुआमला है और प्रत्येक को अपना रास्ता इख़्तेयार करने का हक़ है। हमारा यह कोई नया मौक़फ़ नहीं है जिसे हमने अभी अपनाया हो बल्कि हमारे इस मौक़फ़ की बुनियाद क़ुरआन-ए-करीम की असल तालीमात हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : आपको मालूम होगा कि हाल ही में मलिका बर्तानिया अलीजाबैथ दोम वफ़ात पा गई है और इस का बेटा चार्ल्स सोम बादशाह बना है। यू.के में बादशाह के आफ़ीशल अल्-क़ाबात में एक Defender of the Faith भी है। बहुत से अवसरों पर किंग चार्ल्स ने तमाम मज़ाहिब की तकरीम का इज़्हार किया है। उसने यह ख़ाहिश भी की कि Defender of the Faith की बजाय उसकी पहचान बतौर Defender of all faiths हो। बिलाशुबा यह काबिल-ए-तारीफ़ वर्णन है और किंग चार्ल्स की कुशादादिल तबीयत और सबको साथ लेकर चलने की सोच की अक्कासी करता है। जबकि तख़्त सँभालने पर बाअज़ लेखकों ने इस ख़्याल का इज़्हार किया कि टाइटल में ऐसी तबदीली को आलमी तौर पर ईसाई कम्यूनिटी में सराहा नहीं जाएगा या बाअज़ ग़ैर ईसाई भी उसे नापसंद करें। इस हवाला से एक सुर्ख़ी इस तरह आई कि "बादशाह की तमाम मज़ाहिब के तहफ़्फ़ुज़ की ख़ाहिश शायद ख़ामख़याली ही साबित हो।"

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया जहां कुछ ये ख़्याल करते हैं कि मज़हबी हम-आहंगी को तक़वियत देने की यह कोशिशें व्यर्थ जाएँगी, मेरी नज़र में तमाम मज़ाहिब का तहफ़्फ़ुज़ और हक़ीक़ी मज़हबी आज़ादी का क़ियाम दरअसल दुनिया में अमन क़ायम करने की बुनियाद है। इस हवाला से मैं अमरीकी हुकूमत के इस इक़दाम को सराहता हूँ कि स्टेट डिपार्टमैंट के तहत ऑफ़िस आफ़ इंटरनैशनल रीलीजस फ्रीडम क़ायम किया गया है जो कि अब आलमी सतह पर मज़हबी आज़ादी को फ़रोग़ देने के लिए हर साल इंटरनैशनल कान्फ्रैंस का एहतिमाम करते हैं।

शेष आगे ...

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّی عَلٰی رَسُوْلِهِ الْکَرِیْمِ وَ عَلٰی عَبْدِهِ الْمَسِیْحِ الْمَوْعُوْدِ

خدا کے فضل اور رحم کے ساتھ

ھوالنّاصر

وَاجْعَلْ لِّیْ مِنْ لَّدُنْكَ سُلْطَانًا نَّصِیْرًا
اِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِیْنًا
وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

امام جماعت احمدیہ

اسلام آباد یوکے

MA 16-10-2021

# मेरा संदेश यह है कि

अपने बच्चों की तर्बीयत की तरफ़ विशेष ध्यान दें, उनको वक़्त दें, उनकी पढ़ाई की तरफ़ तवज्जा दें, उनको जमाअत के साथ जोड़ने की तरफ़ तवज्जा दें

अपने घरों में ऐसे माहौल पैदा करें कि बच्चों की नेक तर्बीयत हो रही हो, बच्चे समाज का एक अच्छा हिस्सा बन कर मुल्क और कौम की तरक़्क़ी में हिस्सा लेने वाले बन सकें

44वां सालाना इजतेमा मज्लिस अंसारूलल्लाह भारत के अवसर पर सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का बसीरत अफ़रोज़ विशेष **संदेश**

तिथि 21, 22, 23 अक्तूबर 2022 ई. शुक्रवार के दिन, हफ़्ता, इतवार क़ादियान दारुल आमान में ज़ेली तन्ज़ीमों के मर्कज़ी सालाना इजतेमाआत आयोजित हुए, जिस में मुख़्तलिफ़ इलमी विषयों पर विशेष बैठकों के इलावा इलमी और खेल के मुक़ाबले भी आयोजित किए गए। कोविड 19 के बाद इस वर्ष के सालाना इजतेमाआत पूरी सलाहियत के साथ आयोजित हुए जिन में हिन्दुस्तान के विभिन्न राज्यों से अहबाब-ए-जमाअत कसीर संख्या में शामिल हुई और क़ादियान में ख़ूब रौनक हुई अल्हम्दुलिल्ला। इस अवसर पर मज्लिस अंसारूलल्लाह भारत के लिए हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने अज़ राहे शफ़क़त जो संदेश अरसाल फ़रमाया वह क़ारेईन के लिए पेश है। (संसंस्थान)

बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम

نحمدہ ونصلی علی رسولہ الکریم وعلی عبدہ المسیح الموعود

خدا کے فضل اور رحم کے ساتھ

ھو الناصر

इस्लामाबाद यू. के.
MA 18-10-2022

प्यारे मैंबरान मज्लिस अंसारूलल्लाह भारत

अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाही व बरकातहू

मुझे यह जान कर बहुत ख़ुशी हुई है कि मज्लिस अंसारूलल्लाह भारत को अपना सालाना इजतेमा आयोजित करने की तौफ़ीक़ मिल रही है। अल्लाह तआला इसे हर लिहाज़ से बाबरकत फ़रमाए और इस के नेक परिणाम पैदा फ़रमाए। आमीन

मुझ से इस अवसर पर पैग़ाम भिजवाने की दरख़ास्त की गई है। मेरा पैग़ाम यह है कि अपने बच्चों की तर्बीयत की तरफ़ ख़ास तवज्जा दें। उनको वक़्त दें। उनकी पढ़ाई की तरफ़ तवज्जा दें। उनको जमाअत के साथ जोड़ने की तरफ़ तवज्जा दें। अपने घरों में ऐसे माहौल पैदा करें कि बच्चों की नेक तर्बीयत हो रही हो। बच्चे समाज का एक अच्छा हिस्सा बन कर मुल्क और कौम की तरक़्क़ी में हिस्सा लेने वाले बन सकें।

इस बात में कोई शक नहीं कि बच्चों की तर्बीयत कोई आसान काम नहीं और खासतौर पर इस ज़माने में जब क़दम-क़दम पर शैतान की पैदा की हुई दिलचस्पियाँ मुख़्तलिफ़ रंग में हर-रोज़ हमारे सामने आ रही हो तो ये बहुत मुश्किल काम है लेकिन अल्लाह तआला ने जब दुआएं और तरीक़ बताए हैं तो इस लिए कि अगर हम चाहें तो ख़ुद भी और अपने बच्चों को भी शैतान के हमलों से बचा सकते हैं । हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जिस इनकेलाब के पैदा करने के लिए दुनिया में अल्लाह तआला की तरफ़ से भेजे गए इस का हिस्सा बनने के लिए हमने अपनी समस्त सलाहियतों और ताकतों को इस्तिमाल करना है और अपनी नसल में भी इस रूह को फूंकना है। जो हमारे उद्देश्य हैं उन के लिए दुआएं भी करनी हैं। उनकी तर्बीयत भी करनी है कि समाज के इन सब गंदों और ग़लाज़तों के बावजूद हमने शैतान को कामयाब नहीं होने देना। और दुनिया में ख़ुदा तआला की हुकूमत क़ायम करने की कोशिश करनी है। इं शा अल्लाह तआला क़ुरआन-ए-करीम में हज़रत ज़करिया के हवाले से सूरत अंबिया में इस दुआ का भी वर्णन मिलता है कि

رَبِّ لَا تَذَرْنِیْ فَرْدًا وَّاَنْتَ خَیْرُ الْوٰرِثِیْنَ (अल्-अंबिया : **90**)

कि हे मेरे रब मुझे अकेला न छोड़ और तू सब वारिसों से बेहतर है। इस दुआ में भी जब अल्लाह तआला को خَیْرُ الْوٰرِثِیْنَ कहा है तो स्पष्ट है कि औलाद की दुआ केवल इस लिए नहीं कि औलाद हो जाए और वारिस पैदा हो जाएं जो दुनियावी मुआमलात के वारिस हों बल्कि ऐसे वारिस अल्लाह तआला की तरफ़ से अता हों जो दीन को दुनिया पर मुक़द्दम रखने वाले हों और ज़ाहिर है ऐसी दुआ वही लोग मांग सकते हैं जो ख़ुद भी दीन को दुनिया पर मुक़द्दम रखने वाले हैं। अगर दुनिया-दारी में इन्सान डूबा हुआ है तो नेक वारिस किस तरह माँगेगा। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि

"अतः ख़ुद नेक बनो और अपनी औलाद के लिए एक उम्दा नमूना नेकी और संयम का हो जाओ और उसको मुत्तक़ी और दीनदार बनाने के लिए कोशिश और दुआ करो। जिस क़दर कोशिश तुम उन के लिए माल जमा करने की करते हो उसी क़दर कोशिश इस अमर में करो।"

(मल्-फ़ूज़ात, भाग 8 पृष्ठ 109 ऐडीशन 1985 प्रकाशित इंग्लिस्तान)

अतः औलाद के लिए दुआ और ख़ाहिश इस सोच के साथ और इस दुआ के साथ होनी चाहिए कि ऐसी औलाद हो जो दीन को दुनिया पर मुक़द्दम करने वाली हो। जो हमारी अर्थात माँ बाप की और ख़ानदान की इज़्ज़त क़ायम करने वाली हो। अपने दाद और पड़दादा के नाम की इज़्ज़त क़ायम करने वाली हो। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि

"ख़ुदा तआला की नुसरत उन्ही के शामिल-ए-हाल होती है जो हमेशा नेकी मेंआगे ही आगे क़दम रखते हैं।" फ़रमाया "एक जगह ठहर नहीं जाते और वही हैं जिनका अंजाम बख़ैर होता है"और अंजाम बख़ैर के लिए आपने फ़रमाया कि "अपने लिए और अपने बीवी बच्चों के लिए मुस्तक़िल दुआ करते रहना चाहिए।"

अल्लाह तआला हमें तौफ़ीक़ दे कि हम में से प्रत्येक औलाद के लिए बेहतरीन नमूना बनने वाले हों। दीन को दुनिया पर मुक़द्दम करने के अहद को पूरा करने वाले हों। अल्लाह तआला हमारी औलाद को भी हमेशा हमारी आँखों की ठंडक बनाए रखे और फिर यह सिलसिला आगे भी चलता चला जाए।

वस्सलाम

ख़ाकसार

मिर्ज़ा मसरूर अहमद

ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामसि

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly **BADAR** Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 07 Thursday 15 December 2022 Issue No. 50

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

पृष्ठ 1 का शेष

इस आयत में इन्सान को बताया है कि इन्सान को अपने आमाल में बहुत होशयार और सावधान रहना चाहिए क्योंकि जब किया हुआ अमल उसके इख़्तेयार में नहीं रहता और उसका असर भी बहुत वसीअ है, नज़रों से भी ग़ायब है और साथ भी लगा हुआ है, तो इन सब बातों से मालूम हुआ कि उसका मिटाना बहुत मुश्किल काम है। अतः बड़ी एहतेयात की ज़रूरत है। इसके अमल का नतीजा ख़्वाह जल्दी निकले ख़्वाह देर से परंतु निकलेगा ज़रूर। क्योंकि जबकि कई दफ़ा यूं मालूम होता है कि वे परिंदे की तरह उड़ गया है परंतु चूँकि ये परिंदा गर्दन से बंधा हुआ है आख़िर एक दिन वापस आएगा और इन्सान को अपने किए का मज़ा चखना पड़ेगा। दूसरी जगह क़ुरआन-ए-करीम में फ़रमाया कि

فَمَنۡ یَّعۡمَلۡ مِثۡقَالَ ذَرَّۃٍ خَیۡرًا یَّرَہٗ ○ وَمَنۡ یَّعۡمَلۡ مِثۡقَالَ ذَرَّۃٍ شَرًّا یَّرَہٗ ○

(सूरः : ज़िलज़ाल) कि कोई शख़्स अगर सुर्ख़ चियूंटी के बराबर भी नेक या बदअमल करेगा या हवा के कण के बराबर भी नेक या बद-अमल करे तो वह उस का अंजाम को ज़रूर देख लेगा। इस आयत का यह मतलब नहीं कि तौबा क़बूल नहीं होगी तौबा तो ज़रूर क़बूल होगी परंतु गुनाह करने वाला पीछे ज़रूर रह जाएगा उदाहरणतः फ़र्ज़ कर लो कि दो इन्सान हैं जो नेकी में बराबर हैं उनमें से एक ने एक बदी की और फिर तौबा की। इसके गुनाह को तो ख़ुदा तआला ज़रूर माफ़ कर देगा परंतु जब उसने बदी की, दूसरे शख़्स ने उसके मुक़ाबिल नेकी की तो यह तौबा करने वाला तो उसी पहले दर्जे पर रहा परंतु दूसरा इस से आगे निकल गया। अतः इस ग़लती करने वाले शख़्स को ख़ुदा तआला माफ़ तो कर देगा लेकिन यह न होगा कि उस को इस दूसरे शख़्स के साथ मिला दे जिसने बदी नहीं की थी। वह तो बहर हाल इस से एक दर्जा बढ़ा ही रहेगा। अतः हर अमल का एक असर है जो बाक़ी रहता है। अब तो अल्लाह तआला ने इस मज़मून को समझाने के लिए इन्सान को वायरलैस टेलीगराफ़ी या टेलीफ़ोन का इलम भी बख़्श दिया है जिससे साबित होता है कि बारीक से बारीक हरकत भी हवा में दूर तक कपंती हुई चली जाती है। अतः इन्सान को आमाल में बहुत मुहतात होना चाहिए क्योंकि हर अमल एक बीज की तरह एक नया पौधा पैदा करता है जो बग़ैर उसके इलम के बढ़ता रहता है।

(तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 4 पृष्ठ 312 प्रकाशन कादियान 2010 ई.)

★ ★ ★

## अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार "अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमआत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-करीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मल्फ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुतबात जुमअः और खिताबात, अध्याम्पूर्ण संदेश, ख़ुतबा जुमअः प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इलम के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर अमल करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की तालीम-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी तालीम-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इस का सम्मान किया जाए। इस लिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना सम्भव न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे।

(सम्पादक)

★ ★ ★

## 127वां जलसा सालाना क़ादियान
## 23, 24, और 25 दिसम्बर 2022 ई. के आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 127वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए 23,24,25 दिसंबर 2022 ई. (दिन शुक्रवार, शनिवार और रविवार) की तिथियों की मंज़ूरी प्रदान की है।

जमाअत के लोग अभी से दुआओं के साथ इस मुबारक जलसे में शामिल होने की नियत करके तैयार आरंभ करदें। अल्लाह तआला हम सबको इस अल्लाह की खातिर आयोजित होने वाले इस जलसे से लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और सईद रूहों के लिए हिदायत का माध्यम बनाए। इस जलसे के हर प्रकार से सफ़ल होने के लिए दुआएं करते रहें। आमीन॥

(नाज़िर इस्लाह वा इरशाद क़ादियान)

اب دیکھتے ہو کیسا رجوع جہاں ہوا اک مرجع خواص یہی قادیاں ہوا
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE
(SINCE 1964)
क़ादियान में घर, फ्लैट्स और बिल्डिंग उचित कीमत पर निमार्ण करवाने के लिए सम्पर्क करें, इसी प्रकार क़ादियान में उचित कीमत पर बने बनाए नए और पुराने घर / फ्लैट्स और ज़मीन ख़रीदने और Renovation के लिए सम्पर्क करें
(PROP: TAHIR AHMAD ASIF)
contact no. : 87279-41071, 83603-14884, 75298-44681
e mail : hussainconstructionsqadian@gmail.com
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (ख़ून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.

चौधरी ख़िज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुक़मान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad